हिंदी गृह पत्रिका

सातवां अंक
सितंबर, 2023

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001-2015,
आईएसओ 14001-2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

गोंय पोर्ट दर्पण

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण
हेडलैण्ड सडा-गोवा

राजभाषा सम्मान

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के संयोजन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, द. गोवा को पश्चिम क्षेत्र (ग क्षेत्र) के अंतर्गत राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए माननीय राज्य मंत्री, गृह मंत्रालय, श्री. अजय कुमार मिश्रा के हाथों राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार ।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण को लगातार वर्ष 2016-17, 2017-18 व 2018-19 के लिए राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए श्री सर्बानंद सोणोवाल, माननीय मंत्री, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग एवं आयुष मंत्रालय के हाथों मंत्रालय द्वारा प्रदत्त तृतीय राजभाषा पुरस्कार ।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001-2015,
आईएसओ 14001-2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

गोंय पोर्ट दर्पण

संरक्षक

डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस,
अध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री. गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष
कप्तान मनोज जोशी, उप संरक्षक
श्री. एस. पी. मोहन कुमार, सचिव

संपादक

श्रीमती नीलम कंकरे
हिंदी अधिकारी

सहायक संपादक

श्रीमती रोशन कोमरपंत
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

टंकण सहयोग

श्री शिव कुमार कलबुर्गी
वरिष्ठ लिपिक

विषय-सूची

1.	संदेश	04 – 07
2.	संपादकीय	08
3.	मुरगांव पत्तन में हिंदी पखवाड़ा समारोह, 2022 का आयोजन	09-13
4.	हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हम सब क्या करें?	14
5.	मुरगांव पत्तन में राजभाषा कार्यान्वयन की झलकियां	15
6.	मुरगांव पत्तन में मेरा अनुभव	17
7.	अनुसंधान पोत सिंधु साधना का बचाव अभियान	18-19
8.	गोवा पत्तन का विजन	20
9.	''गुड सेमेरिटन'' ("GOOD SAMARITAN")	21
10.	लालच / जिंदगी का सफरनामा	22
11.	बारिश का मौसम	23
12.	आपका समय क्षेत्र पहचानें, अपनाएं, और मार्गदर्शन करने दें।	24
13.	पृथ्वी माँ	25
14.	अधिक मास	26
15.	जिंदगी	27
16.	शिक्षा प्रणाली में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस – AI)	28-29
17.	जीवन को बेहतर बनाएं	30
18.	पत्तन में आयोजित गतिविधियां– एक नजर	31-51

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से पत्तन प्राधिकरण का सहमत होना अनिवार्य नहीं है, यह लेखकों के निजी विचार हैं।

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

प्रिय साथियों,

मुरगांव पत्तन की वार्षिक हिंदी ई–पत्रिका **''गोंय पोर्ट दर्पण''** के माध्यम से आप सभी के साथ अपने विचार साझा करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

मुझे खुशी है कि मुरगांव पत्तन में हिंदी को संघ की राजभाषा नीति की अपेक्षानुसार उचित स्थान देने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। कार्यालय में वरिष्ठ प्रबंधन से लेकर कर्मचारियों तक सभी अपने कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करते है, जिससे कार्यालय में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी निर्धारित लक्ष्यों का नियमित अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु मुरगांव पत्तन को पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्राप्त हुए है। यह पत्तन के सभी कार्मिकों की लगन एवं कर्मठता का परिणाम है।

राजभाषा कार्यान्वयन के इसी क्रम में मुरगांव पत्तन की वार्षिक हिंदी ई–पत्रिका **''गोंय पोर्ट दर्पण''** का प्रकाशन भी निर्धारित समय के भीतर निरंतरता के साथ किया जा रहा है। हर्ष की बात है कि **''गोंय पोर्ट दर्पण''** का सातवां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

मुझे आशा है कि इस अंक के माध्यम से पाठकों को मुरगांव पत्तन की गतिविधियों की जानकारी के साथ–साथ सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने का अवसर मिलेगा। इस प्रयास के लिए सभी लेखकों और पत्रिका के संपादन के लिए हिंदी अनुभाग को हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस,
अध्यक्ष

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

किसी भी राष्ट्र की भाषा उसकी पहचान होती है। विविधता से भरे हमारे देश में हिंदी भाषा समस्त देश को एकता के सूत्र में बांधती है। अपने सरल, सुबोध एवं सारगर्भित भाषा होने के गुणों के कारण ही हिंदी राजभाषा की अधिकारिणी बनी।

केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं उपक्रमों में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रयास एवं पहल कार्य किए जा रहे है। यह प्रयास तभी सार्थक होंगे जब हम सब राजभाषा हिंदी को दिल से अपनाएंगे और अपने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे।

हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई पहलों में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन पर भी अधिक बल दिया गया है। पत्र–पत्रिकाएं हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने का बहुत अच्छा मंच होती है। मुझे खुशी है कि मुरगांव पत्तन अपनी वार्षिक हिंदी ई–पत्रिका ''**गोंय पोर्ट दर्पण**'' का नियमित रूप से प्रकाशन कर अपने कार्मिकों को अपनी लेखन प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है।

मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूं तथा यह आशा करता हूं कि पत्रिका का अनवरत एवं सफल प्रकाशन होता रहेगा ।

गुरुप्रसाद राय
उपाध्यक्ष

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001-2015,
आईएसओ 14001-2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

हिंदी भाषा सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। यह विभिन्न भाषा-भाषियों और संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। यह भारत के जन-जन के मन में बसी भाषा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार ने प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति को माध्यम बनाया है,जिससे कि लोग भारतवर्ष में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी को स्वेच्छा से गौरव के साथ अपनाएं ।

अत: हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं। इसी कर्तव्य को निभाने के लिए कार्यालय में राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ कार्यालय के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान किया जाता है।

बड़े हर्ष का विषय है कि मुरगांव पत्तन की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका **''गोंय पोर्ट दर्पण''** का सातवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हमारी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में हमारे कार्मिकों की भूमिका का दर्पण बनेगी एवं सभी को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगी।

पत्रिका के नियमित और सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

कप्तान मनोज जोशी,
उप संरक्षक

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

मुरगांव पतन की वार्षिक हिंदी ई–पत्रिका **''गोंय पोर्ट दर्पण''** के माध्यम से मैं सर्वप्रथम आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं । मुझे उम्मीद है कि हिंदी पखवाड़े के इस पावन अवसर को आप सभी कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में वृध्दि के अवसर के रूप में लेंगे।

पत्तन की राजभाषा पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा प्रचार–प्रसार के साथ–साथ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक व सृजनात्मक प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना है । यह हर्ष का विषय है कि मुरगांव पत्तन राजभाषा के प्रचार–प्रसार के इस दायित्व के निर्वहन में सदा प्रयासरत है और प्रति वर्ष अपनी वार्षिक हिंदी ई–पत्रिका **''गोंय पोर्ट दर्पण''** का प्रकाशन करता है।

पत्रिका का प्रकाशन एक श्रम साध्य कार्य है। पतन की वार्षिक हिंदी ई–पत्रिका **''गोंय पोर्ट दर्पण''** के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों और विशेषकर संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूं । मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा प्रयोग को बढ़ाने का एक सशक्त एवं प्रभावी माध्यम बनेगी।

एस. पी. मोहन कुमार
सचिव

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संपादकीय

भारत एक बहुभाषी देश है परन्तु इसकी सभ्यता, संस्कृति एवं आत्मा हिंदी में रची बसी है। हिंदी सर्वाधिक सरल, सुबोध और प्रवाहमयी भाषा है। आज वैश्विक स्तर पर यह तेजी से अपनी पहचान स्थापित कर रही है। भारत की आत्मा को मुखरित करने वाली हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में हिंदी अनुभाग निरंतर प्रयत्नशील रहा है। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन हेतु हमारे प्रयासों की कड़ियों में मुरगांव पत्तन की वार्षिक हिंदी ई–पत्रिका ''**गोंय पोर्ट दर्पण**'' का प्रकाशन एक है।

गोंय पोर्ट दर्पण पत्रिका के माध्यम से पत्तन के अधिकारी और कर्मचारी अपनी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति हिंदी में करने का प्रयास कर रहे है, जो हिंदी के प्रति उनका लगाव प्रकट करता है। राजभाषा में काम करना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि इसमें हमारा गौरव भी है। उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही हमें राजभाषा के कार्यान्वयन का दायित्व सौंपा गया है, जिसे हम पूरी निष्ठा से निभा रहे हैं। आप लोगों का साथ मिला तो हम राजभाषा की सेवा इसी तरह निरंतर समर्पित रूप से कर सकेंगे।

पत्रिका के लेखकों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि अपनी अमूल्य रचनाएं भेजते रहिए ताकि पत्रिका के प्रकाशन में निरंतरता बनी रहे। हमारा प्रयास रहेगा कि पत्रिका का प्रत्येक अंक आपकी आकांक्षाओं पर खरा उतरें।

शुभकामनाओं सहित,

नीलम केंकरे,
हिंदी अधिकारी

आईएसओ 9001-2015,
आईएसओ 14001-2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

मुरगांव पत्तन में हिंदी पखवाड़ा समारोह, 2022 का आयोजन

दि. 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को हमारे देश की आधिकारिक भाषा अर्थात राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और इसी ऐतिहासिक घटना के सम्मानार्थ प्रतिवर्ष दि. 14 सितंबर को संपूर्ण भारत में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । इस दिवस की महत्ता को ध्यान में रखते हुए मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने अपने संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में प्रतिबद्ध रहते हुए दिनांक 14 सितंबर, 2022 से दिनांक 29 सितंबर, 2022 तक हिंदी पखवाड़ा 2022 का आयोजन किया, जिसमें पत्तन अधिकारियों व कर्मचारियों, तालुका स्तरीय स्कूली छात्रों और केंद्र सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/बैंकों के कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताओं /गतिविधियों का आयोजन किया गया ।

सूरत, गुजरात में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री. अमित शाह के कर कमलों द्वारा दि. 14 सितंबर को हिंदी दिवस का शुभारंभ हुआ। इसी के साथ मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में भी श्री गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा समारोह का शुभारंभ हुआ । मुरगांव पत्तन के सभी विभागाध्यक्ष, अधिकारी/ कर्मचारी बोर्ड रूम में उद्घाटन सत्र में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर, उपाध्यक्ष महोदय, पत्तन के सभी विभागाध्यक्ष और अधिकारियों / कर्मचारियों की उपस्थिति में श्री अमित शाह, माननीय गृह मंत्री तथा श्री. सर्बानंद सोणोवाल, माननीय मंत्री, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग एवं आयुष के संदेश पढ़े गए। श्री. गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष, ने इस अवसर पर शुभकामनाएं देते हुए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि राजभाषा के रूप में संविधान निर्माताओं द्वारा हिंदी को दिए गए महत्व के पीछे के दृष्टिकोण को समझें और हिंदी में अपने दिन-प्रतिदिन के सरकारी कार्य स्वरुचि से करें। हिंदी में बोलने और लिखने के ईमानदार प्रयास करें ।

पत्तन के सभी विभागों में भी सामूहिक रूप से हिंदी दिवस संदेश पढ़े गए।

सामान्य प्रशासन व सतर्कता

यातायात

सिविल इंजीनियरी

यांत्रिक इंजीनियरी

समुद्री

वित्त

चिकित्सा

दिनांक 14.09.2022 को ''हिंदी दिवस'' के अवसर पर मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री. वेंकट रमणा अक्कराजु के हिंदी दिवस संदेश को एमपीए कॉर्पोरेट वेबसाइट पर होस्ट किया गया।

दिनांक 15 सितंबर, 2022 को सतर्कता, यातायात और सामान्य प्रशासन विभाग के लिए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया।

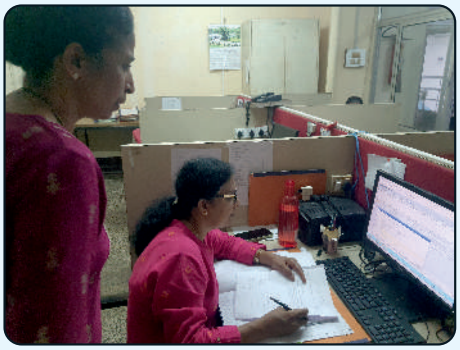

दिनांक: 16 सितंबर, 2022 को चिकित्सा विभाग के लिए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया।

आईएसओ 9001-2015,
आईएसओ 14001-2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

दिनांक: 20/09/2022 को मुरगांव पत्तन एवं नव मंगलूर पत्तन के संयुक्त संयोजन से वरिष्ठतम अधिकारियों के लिए हिंदी के प्रयोग हेतु विभिन्न ई- टूल्स विषय पर एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री. राजेन्द्र वर्मा, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग इस कार्यशाला के संकाय सदस्य थे।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के भाग के रूप में, पत्तन अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं, यथा ''सामान्य हिंदी प्रतियोगिता'', ''शब्द वर्णन प्रतियोगिता'', ''श्रुत लेखन प्रतियोगिता'' ''बात मेरे मन की'' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

कार्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत एक विशेष हिंदी प्रचार-प्रसार गतिविधि के रूप में संजय स्कूल फॉर स्पेशल एजुकेशन, बोगदा, वास्को तथा न्यूडॉन आशादीप स्कूल, हेडलैण्ड सडा के स्पेशल बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान मुरगांव तालुका स्थित सेकंडरी स्कूलों के छात्रों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसके लिए विषय था, ''आत्मनिर्भर भारत –छात्रों का योगदान''

इस दौरान दि. 26-09-2022 को दीपविहार हायर सेकंडरी स्कूल के छात्रों के लिए ''हिंदी भाषा का महत्त्व'' विषय पर जागरुकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया ।

इसी भांति नराकास, द. गोवा के तत्वावधान में मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा नराकास, द. गोवा के अंतर्गत केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों व बैंकों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए ''काव्यांजलि'' नामक मौलिक हिंदी काव्य रचना प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 27 /09/2022 को पत्तन के पारंगत प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए पुन:श्चर्या कार्यशाला का भी आयोजन किया गया ।

दिनांक 28 सितंबर, 2022 को वित्त, समुद्री, सीई व सीएमई विभागों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया।

श्री. जी.पी.राय, उपाध्यक्ष एमपीए की अध्यक्षता में तथा सभी विभागाध्यक्ष और अधिकारियों व कर्मचारियों की उपस्थिति में दि. 29/09/2022 को पूर्वाह्न 11:00 बजे मुरगांव पत्तन अतिथि गृह के कांफ्रेंस हॉल में हिंदी पखवाड़ा, 2022 का समापन कार्यक्रम संपन्न हुआ। श्री. अरुण कुमार मिश्र, सचिव (पर्यावरण), गोवा सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

वि.स.व मु.ले.अ./ वित्त विभाग को राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु पतन की ''राजभाषा रोलिंग शील्ड 2021-22'' प्रदान की गई।

इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण किया गया। 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षाओं में हिंदी विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले दीपविहार सेकेंडरी व हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पत्तन की हिंदी पत्रिका गोंय पोर्ट दर्पण के छठवे अंक (ई-पत्रिका) का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया।

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हम सब क्या करें ?

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। सरकार हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हर साल 14 सितम्बर को हिंदी दिवस का सभी सरकारी कार्यालयों में आयोजन करती है। सरकार तो हिंदी को बढ़ावा देने के लिए जो कुछ कर सकती है वो करती है पर हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सबसे ज्यादा यह जरूरी है कि हम स्वयं कुछ प्रयत्न करें।

हम कुछ छोटे-छोटे उपाय करके अपने-अपने स्तर पर हिंदी को थोड़ा-थोड़ा बढ़ावा तो दे ही सकते हैं।

आइए देखें कि किन छोटे-छोटे उपायों से हिंदी को बढ़ावा दे सकते हैं –

1. जनता की सूचना के लिए प्रदर्शित साइन बोर्ड, नाम पट्टिकाओं, काउन्टर बोर्ड, सूचना पट्ट आदि को द्विभाषी में अथवा त्रिभाषा (क्षेत्रीय भाषा व हिंदी तथा अंग्रेजी) में अवश्य बनवाएं ।
2. सभी पपत्रों, मुद्रित सामग्री, विजिटिंग कार्ड तथा अन्य लेखन सामग्री को हिंदी व अंग्रेजी में मुद्रित (प्रिंट) करवाया जाए।
3. हो सके तो सरकारी पत्रों के साथ-साथ व्यक्तिगत पत्रों को हिंदी में ही लिखा जाए।
4. कंप्यूटर पर यूनिकोड सुविधा सुनिश्चित कराएं व सरलता से हिंदी में टाईप करना सीखें ।
5. लिखने में आसान हिंदी का प्रयोग करें ताकि सभी लोग समझ सकें।
6. अच्छी हिंदी जानने वाले कभी-कभी उन लोगों की कठिनाई नहीं समझ पाते जिन्होंने हाल ही में थोड़ी बहुत हिंदी सीखा है। ऐसे लोगों की कठिनाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए और अपने पांडित्य का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।
7. आपस में वार्तालाप हिंदी में करें।
8. हिंदी के वाक्यों में संस्कृत के कठिन शब्दों का अनावश्यक प्रयोग न करें।
9. हिंदी के वाक्यों में अंग्रेजी की वाक्य संरचना से बचें अर्थात वाक्य रचना हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार ही होनी चाहिए। वह अंग्रेजी मूल का अटपटा अनुवाद नहीं होना चाहिए।
10. जहां कहीं भी यह लगे कि पढ़ने वाले को हिंदी में लिखे किसी शब्द या पदनाम को समझने में कठिनाई हो सकती है, तब कोष्ठक में अंग्रेजी रुपान्तर भी लिख देना उपयोगी रहेगा।
11. अगर आप को हिंदी में लिखने में कठिनाई या झिझक है तो इसके लिए शुरूआत छोटी-छोटी टिप्पणियों को हिंदी में लिख कर करनी चाहिए। आप हिम्मत करेंगे तो धीरे-धीरे सब हिंदी में काम करने लगेंगे।
12. खास बात यह है कि हमें अंग्रेजी में सोचकर हिंदी में नहीं लिखना चाहिए। कोशिश यह होनी चाहिए कि हिंदी में ही सोच कर हिंदी में लिखें।
13. हिंदी में लिखते समय शब्दों के लिए अटकिए मत, किसी भी शैली के लिए रुकिए नहीं और अशुद्धियों से घबराएं नहीं। यदि लिखते समय हिंदी का शब्द न आए, तो देवनागरी लिपि में अंग्रेजी के शब्द को लिप्यंतरित कर लिखें, जैसे टिकट, प्रमोशन, रिटायर आदि ।
14. कोशिश करें कि मौलिक रुप से हिंदी लेखन करें। अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद का सहारा बहुत कम लेना चाहिए क्योंकि दोनों भाषाओं की शैली अलग-अलग है।
15. हो सकता है कि शुरू में हिंदी में काम करने में आपको झिझक महसूस हो सकती है किन्तु काम करते-करते आप देखेंगे कि अंग्रेजी की तुलना में हिंदी सरल भाषा है, इसमें समय बचता है, हिंदी भाषा हमारी अभिव्यक्ति को स्पष्ट और प्रभावी बनाती है।

तो हम सब को प्रण लेना चाहिए कि हम हिंदुस्तानी अर्थात भारत के नागरिक होने के नाते हिंदी को बढ़ावा देने के सभी प्रकार के उपाय करेंगे ताकि हमारी अपनी हिंदी भाषा का प्रसार और प्रचार हो सके।

मुरगांव पत्तन में राजभाषा कार्यान्वयन की झलकियां

मुरगांव पत्तन में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

मुरगांव पत्तन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

पत्तन में हिंदी पारंगत प्रशिक्षण कक्षाओं का संचालन

विभागों में हिंदी कार्य की समीक्षा

मुरगांव पत्तन में मेरा अनुभव

मैंने 30 जनवरी, 2016 को मुरगांव पत्तन में अपना पदभार ग्रहण किया । पिछले 7 वर्षों के दौरान मैंने विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का अनुभव किया है, जो कि मेरे पिछले संगठनों में मेरे सामने आई चुनौतियों के विपरीत है। अन्य पत्तनों की तुलना में जहां मैंने पहले काम किया है, मुरगांव पत्तन आकार में अपेक्षाकृत छोटा है।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) के उपाध्यक्ष के रूप में, मुझे पिछले सात वर्षों में इसके विकास को देखने और इसमें सक्रिय रूप से योगदान देने का सौभाग्य मिला है। इस सम्मानित पद पर काम करना मेरे लिए एक विशेषाधिकार रहा हैऔर इससे मुझे भारत के महत्वपूर्ण समुद्री केंद्रों में से एक का पर्यवेक्षण करने के दौरान उल्लेखनीय परिवर्तनों और चुनौतियों को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिला है। इस लेख में, मैं अपनी यात्रा को प्रदर्शित करूंगा, जहां उन सभी उपलब्धियों, विशिष्ट गतिविधियों और परिवर्तनकारी पहल कार्यों पर प्रकाश डालूंगा जिन्होंने मेरे कार्यकाल के दौरान मुरगांव पत्तन प्राधिकरण की प्रगति को आकार दिया है।

अवसंरचना को मजबूत बनाना:

एमपीए में मेरे कार्यकाल के दौरान मेरा प्रमुख केंद्र बिंदु था, अवसंरचना को मजबूत करना और इसकी परिचालन क्षमता को बढ़ाना । हमने पत्तन सुविधाओं के आधुनिकीकरण के लिए महत्वाकांक्षी परियोजनाएं शुरू की, जिनमें कंटेनर हैंडलिंग टर्मिनलों का विस्तार और उन्नयन, नए बर्थ का निर्माण और अत्याधुनिक कार्गो हैंडलिंग उपकरणों का कार्यान्वयन शामिल है। इन पहल कार्य ने न केवल पत्तन की क्षमता को बढ़ाया बल्कि टर्नअराउंड समय में भी सुधार किया, जिससे अंततः क्षेत्र में अधिक व्यापार और निवेश आकर्षित हुआ।

प्रौद्योगिकी को अपनाना:

समुद्री उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है, और डिजिटलीकरण बदलाव लाने में अग्रसर रहा है। इसे पहचानते हुए, हमने एमपीए में प्रौद्योगिकी परिवर्तन की यात्रा शुरू की। हमने पत्तन प्रबंधन के लिए उन्नत सॉफ्टवेयर सल्यूशन्स को एकीकृत किया, कार्गो ट्रैकिंग सिस्टम को सुव्यवस्थित किया और प्रक्रियाओं को सरल बनाने और कागजी कार्रवाई को कम करने के लिए ई-गवर्नेंस प्रणालियों को कार्यान्वित किया। डिजिटल क्रांति ने न केवल परिचालन क्षमता में सुधार लाया है बल्कि पारदर्शिता और जवाबदेही भी बढ़ाई है।

पर्यावरणीय स्थिरता:

आज की दुनिया में स्थिरता एक अनिवार्यता होने के कारण हमने एमपीए में पर्यावरण अनुकूल पध्दितयों को अपनाने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध किया है। हमने सक्रिय रूप से हरित पहल कार्य, जैसे कि पत्तन प्रचालनों के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को स्थापित करना, अपशिष्ट रीसाइक्लिंग कार्यक्रमों को लागू करना और विस्तार परियोजनाओं के दौरान पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना, आदि, को अपनाया है। इन प्रयासों के कारण न केवल हमने प्रशंसा अर्जित की बल्कि जिम्मेदार पत्तन प्रबंधन के प्रति एमपीए की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया है।

मुद्दों को सुलझाने या अन्य संगठनों, वैधानिक प्राधिकरणों, सरकारी संस्थाओं आदि के साथ मामलों को आगे बढ़ाने के दृष्टिकोण के संबंध में मैंने पिछले 7 वर्षों में जो देखा है वह अपेक्षा के अनुरूप आक्रामक नहीं प्रतीत होता है।यद्यपि, यह सच है कि, कुछ हद तक लोगों में एक्सपोज़र की कमी है, क्योंकि वे एक ही संगठन में लंबे कार्यकाल के लिए काम करते आए हैं और लंबे समय तक एक ही पद पर बने रहने के कारण उनमें एक प्रकार की असंतोष की भावना दिखाई देती है। यह भी एक तथ्य है कि, कुछ प्रतिभाशाली अधिकारियों में भी अनुभव की कमी के कारण दूरदर्शिता का अभाव होता है या समय पर प्रतिबद्धता के अनुरूप कार्य निष्पादित नहीं कर पाते है। पत्तन लंबे समय से वित्तीय तनाव से जूझ रहा है, और इन परिस्थितियों में कर्मचारियों को लक्ष्य प्राप्त करने और आने वाले वर्षों में स्थिति को पूरी तरह से बदलने के लिए नए अवसरों की पहचान करने और दृष्टिकोण में बदलाव लाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। अन्य पत्तनों या संगठनों की सफलता गाथाओं को देखने की आदत विकसित करने और अपने पत्तन में भी ऐसी पध्दतियों को अपनाने के लिए प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है ताकि बेहतर मानव प्रबंधन और आरामदायक कामकाजी माहौल हो सके।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष के रूप में मेरा कार्यकाल एक परिवर्तनकारी और लाभप्रद अनुभव रहा है। इन सात वर्षों के दौरान, हमने कई चुनौतियों का सामना किया है, अवसरों को अपनाया है और हम एक गतिशील और प्रगतिशील पत्तन प्राधिकरण के रूप में विकसित हुए हैं। एक समर्पित टीम, दूरदर्शी नेतृत्व और हितधारकों के समर्थन के संयुक्त प्रयासों ने एमपीए के लिए विकास और सफलता का मार्ग प्रशस्त किया है। जैसा कि मैं पत्तन क्षेत्र में अपने कार्यकाल की समाप्ति की ओर बढ़ रहा हूं, मैं यह जानकर गर्व और संतुष्टि की भावना से भर जाता हूं कि हमने जो नींव रखी है वह आने वाले वर्षों में मुरगांव पत्तन प्राधिकरण को और अधिक ऊंचाइयों की ओर ले जाएगी।

गुरुप्रसाद राय
उपाध्यक्ष, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

अनुसंधान पोत सिंधु साधना का बचाव अभियान

''जोशी जी मुझे अभी-अभी राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. सिंह का फोन आया था वे अत्यधिक चिंतित थे और बता रहेथे कि उनकी एक अनुसंधान पोत सिंधु साधना समुद्र के बीच में इंजन बंद होने के कारण बहुत बड़े संकट में है। क्या हम कुछ मदद कर सकते हैं ?''

दूरभाष पर अध्यक्ष महोदय के शब्दों में चिंता साफ झलक रही थी । उनकी यह चिंता उचित भी थी क्योंकि राष्ट्रीय समुद्री अनुसंधान की यह पोत सिंधु साधना एक 'स्टेट ऑफ दि आर्ट' पोत थी जिस पर वर्तमान में कुल मिलाकर 37 लोग संवार थे, जिसमें 28 लोग चालक दल सदस्य और 9 समुद्री वैज्ञानिक थे। साथ ही पोत पर अनुसंधान हेतु कई बहुमूल्य यंत्र और इनके द्वारा लिया गया डाटा उपलब्ध था, जिसकी कुल कीमत लगभग 700 करोड रुपए थी जो कि लगभग उतना ही है जितना कि अभी चंद्रयान -3 के प्रोजेक्ट पर लगाया गया है।

अध्यक्ष महोदय उस दिन किसी राजकीय कार्य हेतु गोवा से बाहर गए थे । क्योंकि मुझे इस संदर्भ में सिग्नल स्टेशन से पहले ही सूचना प्राप्त हो चुकी थी और यह पता था कि जिस स्थान पर सिंधु साधना अभी संकट में थी वह स्थान गोवा से करीब-करीब तीस समुद्री मील से भी अधिक दूरी पर था । हमने सिंधु साधना को एमआरसीसी मुंबई से संपर्क करने का सुझाव दे दिया था क्योंकि इस प्रकार की विषम स्थितियों का सामना करने के लिए सरकार द्वारा एमआरसीसी को उचित संसाधन उपलब्ध कराए गए थे, जैसा कि ओशन गोइंग इमर्जेंसी टोइंग वेसल (इ.टी.वी.), इत्यादि ।

मानसून अपने चरम पर था। समुद्र की लंबी और ऊंची लहरों की ऊंचाई करीब-करीब चार से पांच मीटर थी, ऐसे मौसम में अपनी टग बोट को ब्रेकवाटर से बाहर भेजना खतरे से खाली नहीं था,क्योंकि ये टग बोट मात्र हार्बर में काम करने के लिए ही उचित थी, गहरे समुद्र में और वह भी ऐसी विषम परिस्थितियों के लिए वे उपयुक्त नहीं थी । मुझे यह बिल्कुल भी उचित नहीं लग रहा था कि मैं अपनी टग बोट को उस दिशा में जाने का आदेश देता, मुझे पता था कि मेरा यह निर्णय आत्मघाती हो सकता था ।

चूकि किसी भी संस्था के अध्यक्ष उस परिवार के पिता की तरह होते हैं ,मैंने उनकी चिंता को ध्यान में रखते हुए उन्हें बताया कि हमारी टग बोट को वर्तमान में इतनी दूर भेजना उचित नहीं है, और मन में बार-बार एक विचार आ रहा था कि कही हमारी स्थिति भी ऐसी नहो जाए जैसे कि अनेक बार यह सुनने में आता है कि एक डूबते व्यक्ति को बचाने के लिए दूसरे व्यक्ति को भी अपनी जान गंवानी पड़ी।

मैं अपनी जिम्मेदारी समझ रहा था लेकिन मैंने अपनी व्यावसायिक समझ से निर्णय लिया कि वर्तमान परिस्थितियों में टग बोट वहां नहीं भेजी जा सकती थी ।

मैंने अध्यक्ष महोदय से अपने मन की बात साझा की।

''ठीक है आप को जो उचित लगे करें लेकिन कोशिश की जाए कि जहां तक हो सके हम उनकी सहायता करें ''

मेरा अनुमान है कि वास्तविकता को जानने के पश्चात अध्यक्ष महोदय को थोड़ी हताशा हुई होगी, लेकिन क्योंकि उन्हें मुझपर विश्वास था अत: उन्होंने मेरा मनोबल बढ़ाते हुए पुनः कहा ''कृपया आप देखें कि किसी भी तरह चाहे भारतीय तटरक्षक दल के साथ सहयोग करके या जो भी कोई अन्य संसाधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता हो या संदेश प्रसारित करने की आवश्यकता हो तो आप इसे सुनिश्चित करें ''

जी महोदय, कहकर अध्यक्ष महोदय से वार्तालाप समाप्त हुई।

अपने अध्यक्ष द्वारा समुद्री अनुसंधान संस्थान के निदेशक को दिए हुए वचनों का सम्मान रखने के लिए अभ्यास स्वरूप मैंने एक टग बोट को ब्रेकवाटर के बाहर भेजने का निर्णय लिया । लेकिन उम्मीद के अनुसार ही टग बोट ब्रेकवाटर से थोड़ा ही बाहर जाकर वापस आ गई, क्यों कि वह बहुत खतरनाक तरीके से हिलने डुलने लगी थी।

इस बीच हमें सूचना प्राप्त हुई कि भारतीय तटरक्षक की एक पोत 'आईसीजी-19 सुजीत' सिंधु साधना के पास पहुंच रही है और शीघ्र ही बचाव अभियान आरंभ हो जाएगा, यह सोचकर मेरी चिंता थोड़ी कम हुई ।

सिग्नल स्टेशन पल-पल की खबर लेकर मुझे भेज रहा था और मैं यह संदेश अध्यक्ष महोदय तक पहुंचा रहा था ।

अध्यक्ष महोदय की तरफ से हमारा मनोबल बढ़ाने वाले संदेश हमें प्राप्त हो रहे थे लेकिन इस बीच अचानक पता चला कि पोत को खींचनेवाली रस्सी टूट गई है और सिंधु साधना तूफानी हवा के प्रवाह में खतरनाक तरीके से पथरीली जमीन की तरफ जा रही थी । हमारे तटरक्षक बल ने सूझबूझ का परिचय देते हुए एक बार पुनः इस रस्सी को जोड़ लिया और गोवा की दिशा अपनी यात्रा सुचारू की ।

अंततः जब सिंधु साधना गोवा से मात्र दस मील की दूरी पर थी तो मैं अपनी टीम , जिस में बहुत अनुभवी पायलट कैप्टन अनिल कुलकर्णी और कैप्टन आकाश कुमार थे, को लेकर सिग्नल स्टेशन पर चला गया जिससे हम देख सके कि हवा और पानी के प्रवाह का आनेवाले जहाज पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा था।

हमने तटरक्षक बल की पोत से संपर्क साधा और प्रार्थना की कि वे जितने अंदर आ सके उतने अंदर आ जाएं लेकिन उनकी अपनी सीमितता थी, क्यों कि भारतीय तटरक्षक बल की यह पोत खुले समुद्र में तो दूसरे पोत को खींचने का काम कर सकती थी लेकिन संकीर्ण स्थान पर उस के लिए यह संभव नहीं था।

मैंने अपनी टीम के साथ पूरी योजना का कागजी मानचित्र पर अभ्यास किया, उसके बाद दोनों पायलटों को बारी-बारी से पूछ लिया कि यदि वे इस पूरी योजना को अच्छे से समझ चुके हैं। उन दोनों के आत्मविश्वास को देखकर मुझे लगा कि हम यह अभियान सफलता पूर्वक संपन्न कर लेंगे। फिर भी ज्यों-ज्यों तट रक्षक बल की पोत पत्तन के नजदीक आ रही थी, मेरी स्थिति ऐसी हो रही थी कि मानो फूटबॉल के मैदान में डिफेन्डर विरोधी टीम के खिलाडियों को छकाकर मुझे गोल पोस्ट के नजदीक बॉल पास करने वाला है और मेरी स्थिति उस स्ट्राइकर की तरह थी जिसे वह बॉल गोल कीपर को छकाते हुए गोल पोस्ट में डालनी थी। मेरे लिए यह गोल कीपर समुद्र की बड़ी लहरें और जहाज के घूमने हेतु स्थान की संकीर्णता थी। ऐसा लग रहा था, जैसे स्टेडियम में बैठें सारे दर्शकों की आँखें स्ट्राइकर पर थी। छोटी सी व्यावसायिक गलती बॉल को गोल पोस्ट के बाहर कर सकती थी, यानी कि हमारा कोई भी निर्णय यदि पोत को ब्रेकवाटर पर लाने में सफल नहीं हो पाता वह तट रक्षक बल के किए गए कार्यों पर पानी फेर देता व साथ ही हम सभी को निराशा और ग्लानि से भर देता।

कैप्टन अनिल कुलकर्णी टग टैग राजवीर पर सवार हुए और कैप्टन आकाश कुमार टग टैग शिव पर सवार हुए, तीसरा टग ए. के. 10 इनके पीछे सहायता के लिए रखा गया था ।

एमआरसीसी के द्वारा भेजा हुआ टग ''वाटरलिली'' सिंधु साधना के पिछले हिस्से पर बांध लिया गया जिससे कि सिंधु साधना हमेशा हमारे नियंत्रण में रहे और तूफानी हवाओं के प्रभाव से कहीं फिर हमारे हाथ से निकल ना जाए ।

इसके बाद तटरक्षक पोत 'सुजीत' की रस्सी छोड़ते ही कैप्टन कुलकर्णी ने अपने टग को सिंधु साधना के आगे के छोर पर बांध लिया, बीच समुद्र में बड़ी-बड़ी लहरों के ऊपर-नीचे होने के प्रभाव से इस तरह के अभियान बहुत ही खतरनाक हो सकते हैं रस्सी बांधने या रस्सी को छोड़ने में लोगों के पानी में गिरने की संभावना भी बनी रहती है, लेकिन भगवान के आशीर्वाद से और कर्मठ व्यक्तियों के व्यावसायिक व्यवहार से यह संभव हो पाया और अंततोगत्वा दि. 28 जुलाई 2023 की रात के लगभग 10:15 बजे सिंधु साधना को सफलता पूर्वक पोर्ट के ब्रेकवाटर बर्थपर बांध दिया गया जहांपर मैं स्वयं, भारतीय तटरक्षक गोवा प्रमुख डीआईजी अरुणाभ बोस और भारतीय समुद्री अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील कुमार सिंह अपनी सांसे थामे जहाज के आने का इंतजार कर रहे थे ।

निश्चित ही मेरे व्यावसायिक जीवन का यह एक बहुत ही रोमांच से भरा हुआ अभियान था जिसका मुझे निर्देशन करने का अवसर मिला। हमारे अध्यक्ष महोदय डॉ. एन. विनोदकुमार वहां पर उपस्थित नहीं हो पाए लेकिन पल-पल की खबर उन तक पहुंचाई जा रही थी, हमारी सफलता पर उन्होंने हम सबको बधाई दी।

कप्तान मनोज जोशी
उप संरक्षक / समुद्री विभाग

गोवा पत्तन का विजन

मैंने विभिन्न पत्तनों में विविध पदों/स्थानों पर कार्य किया है । मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के संबंध में मेरे दृष्टिकोण/विचार निम्नानुसार संक्षेप में प्रस्तुत हैं;

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) भारत के तटीय राज्य गोवा में पश्चिमी तट पर बसा एक महा पत्तन है। वर्ष 1885 में एक प्राकृतिक हारबर की जगह पर स्थापित, यह भारत के सबसे पुराने पत्तनों में से एक है।

गोवा की असली सुंदरता इसके अद्भुत समुद्र तटों, झरनों, जंगल, वन्य जीवन, द्वीपों, चर्चों, मंदिरों और विश्व धरोहर वास्तुकला में निहित है। पश्चिमी घाट रेंज पर स्थित होने के कारण इसमें प्रचुर मात्रा में वनस्पति और जीव-जंतु भी हैं और इसे जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में वर्गीकृत किया गया है। गोवा प्राचीन पुर्तगाली उपनिवेश, रेतीले तटों, जंगलों, स्मारकों और स्वादिष्ट व्यंजनों का मिश्रण है और गोवावासी बहुत शांतिपूर्ण, हसमुख,बेहद विनम्र और भरोसेमंद हैं।

पर्यटकों को आकर्षित करने व साथ ही पत्तन के विकास हेतु काफी संभावनाएं है;

क) सुंदर गोवा में प्रवेश करते समय महसूस करने के लिए कलाकृतियों / कृत्रिम झरनों, संगीतमय रोशनी का निर्माण करके गोवा के सभी तरफ से प्रवेश आकर्षक होना चाहिए।

ख) सभी नवनिर्मित पुलों में गोवा सागर की प्राकृतिक सुंदरता को महसूस करने के लिए दर्शक दीर्घा का प्रावधान किया जाना चाहिए ताकि पर्यटक स्थल के रूप में आकर्षित किया जा सके और प्राचीन पुर्तगाली ऑटोमोबाइल सुविधाओं के साथ बैल की सवारी / घोड़े की सवारी का उपयोग किया जा सके।

ग) सभी मनोरंजन और अन्य सुविधाओं सहित गोवा हेरिटेज शैली के बोट हाउस की व्यवस्था करना।

घ) विनिर्माण कारखानों/उद्योगों/संस्थानों/खनन और अन्य प्रमुख संबंधित उद्योगों जैसे रोजगार पैदा करने के लिए वाणिज्यिक संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देना।

ड.) वर्तमान में पर्याप्त भूमि क्षेत्र की अनुपलब्धता के कारण पत्तन का दायरा सीमित है। इसलिए पत्तन कनेक्टिविटी अवसंरचना और आधुनिकीकरण/मशीनीकरण आदि में सुधार करके गोवा के आसपास के क्षेत्रों में पत्तन संबंधी गतिविधियों को विकसित करना आवश्यक है, क्योंकि पत्तन में अधिक कार्गो को संभालने की क्षमता हो सके ।

च) गोवा में विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध भूमि क्षेत्र की पहचान करें, जिसमें पत्तन व गोवा सरकार, पत्तन/पर्यटन से संबंधित गतिविधियों जैसे रोपवे, कार्गो भंडारण सुविधाओं का विकास, सीएफएस, संग्रहालय, कुशल विकास गतिविधियां, मरीना, जहाज निर्माण, शुष्क गोदी, समुद्र में सौर ऊर्जा, समुद्री विमान, विश्व स्तरीय जल खेल विकसित करने के प्रयास कर सकता है।पत्तन/राज्य और केन्द्र सरकार की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में कैसीनो, व्यापार संवर्धन केंद्र, परिवहन सुविधा का आसान तरीका, विशिष्ट मूल्य संवर्धन की पहचान, फूड कोर्ट, पार्लर, तटीय कार्गो संचलन और फ्लोटिंग जेटी / बोट आदि की व्यवस्था करना।

उपरोक्त क्षमता को ध्यान में रखते हुए गोवा सरकार और गोवा पत्तन प्राधिकरण द्वारा पत्तन व गोवा सरकार की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने हेतु दृष्टिकोण / विचारों की पूर्ति कर/ आगंतुकों / वैश्विक निवेशकों के अभाव का समाधान किया जाना है।

दुनिया में, अधिकांश पर्यटक मध्यम वर्ग और उससे ऊपर के लोग हैं जो गोवा के इस प्रतिष्ठित पर्यटन स्थलों का दौरा करने आते हैं, जिसमें पत्तन भी शामिल है । विभिन्न मंचों, सोशल मीडिया, उच्च स्तरीय बैठकों, सम्मेलनों आदि में निवेशक, गोवा के विकास के लिए अपना पैसा निवेश करने / खर्च करने के लिए तैयार हैं, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से आयात / निर्यात सुविधा के मामले में पत्तन को लाभ होता है जिससे लक्षित यातायात में वृद्धि और पत्तन का विकास होता है। ।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, कमजोर क्षेत्रों पर विचार करने / सुधारने और विश्व स्तरीय सुविधाएं बनाने के लिए संभावित क्षेत्रों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए गोवा की उचित योजना बनानी आवश्यक है ताकि गोवा दुनिया में शीर्ष पर्यटक स्थलों / कार्गो हैंडलिंग में से एक हो, जिससे पत्तन के विकास में अप्रत्यक्ष रूप से सहायता मिलती है, जिसकी भारतीय अर्थशास्त्री को अपेक्षा / आवश्यकता है।

सुरेश एस. पी. पाटिल
मुख्य अभियंता, सिविल इंजी. विभाग

"गुड सेमेरिटन"
("GOOD SAMARITAN")

जो व्यक्ति दूसरों की मदद करता है उसे अक्सर ''गुड सेमेरिटन'' कहा जाता है। लेकिन (गुड सेमेरिटन) क्या है ? बाइबल के अनुसार सेमेरिटन एक व्यक्ति-समूह था जो असीरियन पर जीत हासिल करने के बाद इज़राइल में रहते थे । वे यीशु के समय से लेकर आज तक सीमित संख्या में जीवित रहे। ''गुड सेमेरिटन'' यीशु मसीह के सबसे प्रसिद्ध पैरेबल में से एक है। यह पैरेबल ल्यूक 10:25:37 में उल्लिखित है। जब एक आदमी जेरूजलेम से जेरिको जा रहा था तब लुटेरों ने उस पर हमला किया और उसे सड़क पर पीट-पीटकर घायल कर दिया। एक पादरी सहित कई लोग सड़क से गुजर रहे थे तब उन्होंने उस घायल आदमी को देखा, लेकिन कुछ नहीं किया। उसी समय एक सेमेरिटन वहां से जा रहा था, उसने घायल आदमी का खून बहता देखकर तुरंत उसके घाव पर पट्टी बाँधी और उसे अपने गधे पर बिठाया, और सराय में ले जाकर उसकी देखभाल की। यीशु मसीह ने तब कहा कि केवल यही सेमेरिटन इस घायल व्यक्ति का पड़ोसी बनने के योग्य है और सभी को सलाह दी, ''जाओ और ऐसा ही अच्छा कार्य करो''।

किसी भी अन्य समय की तुलना में आजकल ''गुड सेमेरिटन'' की सबसे अधिक आवश्यकता है क्योंकि सड़क दुर्घटनाओं में सड़कों पर घायलों और मरने वालों की संख्या बढ़ रही हैं, जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। गोवा में तेज गति से गाड़ी चलाने / यातायात नियमों का पालन न करने / नशे की हालत में गाड़ी चलाने के कारण होने वाली दुर्घटनाओं के कारण सड़क पर प्रतिदिन लगभग एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। राहगीर चाहकर भी मदद करने से कतराते है क्योंकि उन्हें लगता है कि मदद करने से पुलिस / कानूनी प्रक्रियाओं से गुजरना पडता है, जो काफी परेशान करनेवाली बात हैं। इस प्रकार अस्पताल में ले जाने में हुई देरी के कारण घायल व्यक्ति वहीं पे दम तोड देता है ।

हालाँकि, 30 मार्च 2016 को, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने ''गुड सेमेरिटन'' की सुरक्षा के लिए सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी किए गए दिशा निर्देशों को ''फोर्स ऑफ लॉ (कानून का बल)'' दिया। गुड सेमेरिटन संबंधी कानून बनाने का मुख्य उद्देश्य सड़क दुर्घटना के घायलों की सहायता करना और बचाव के लिए आगे आने वाले राहगीरों को कानूनी सुरक्षा प्रदान करना है। गुड सेमेरिटन को यह अधिकार हैं कि वह किसी भी नागरिक या दण्डात्मक दायित्व के लिए उत्तरदायी नहीं होगा और उसे तुरंत अस्पताल से जाने की अनुमति दी जाएगी और साथ ही उसे अपनी व्यक्तिगत जानकारी देने के लिए और घायल के इलाज के लिए पैसे जमा करने के लिए भी बाध्य नहीं किया जाएगा। सड़क दुर्घटना में घायलों की मदद के लिए जनता में विश्वास पैदा करने की जरूरत है।

''सेव लाइफ़ फ़ाउंडेशन'' द्वारा देश भर में कराए गए सर्वेक्षण से पता चला है कि 84% लोगों को अभी भी ''गुड सेमेरिटन लॉ'' के बारे में जानकारी नहीं है। मेडिकल कॉलेजों सहित पुलिस विभाग, स्कूलों और कॉलेजों में संवेदनशीलता / जागरूकता पैदा की जानी चाहिए। इस कानून को मेडिकल पाठ्यक्रम में ''फॉरेंसिक मेडिसिन'' की पाठ्य पुस्तक में शामिल किया जाना चाहिए। सरकार जन जागरूकता के लिए उचित स्थानों पर बैनर, पोस्टर भी लगा सकती है। टेलीविज़न को ''गुड सेमेरिटन लॉ'' के लिए पूरे देश में जागरूकता का प्राथमिक स्रोत बनाया जाना चाहिए। यहां तक कि ''गुड सेमेरिटन'' द्वारा बचाई गई एक जान भी पीड़ितों के लिए एक आशीर्वाद है। डॉक्टर और नर्स ''गुड सेमेरिटन'' के रूप में उपलब्ध हैं क्योंकि उन्हें आपातकालीन देखभाल और पुनर्जीवन में प्रशिक्षित किया जाता है। वे न केवल ''गुड सेमेरिटन'' हो सकते हैं, बल्कि ''गोल्डन आवर'' में पीड़ित की सहायता करने के लिए ''सर्वश्रेष्ठ सेमेरिटन'' भी हो सकते हैं।

आज जो आपके लिए पराया है, कल वही आपका कोई प्रियजन हो सकता है। ''गुड सेमेरिटन'' बनने में संकोच न करें

डॉ. निमिष वी. पिल्लै
एमडी डीजीओ एफआईसीओजी
स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं पूर्व सीएमओ
एमपीए अस्पताल

लालच

हमें जीवन में सिखाया गया है कि लालच बहुत ही बुरी बात है। यह जीवन मूल्यों का ह्रास करता है ।

हम सभी जानते हैं कि लालच मानव स्वभाव का अंतर्निहित चरित्र नहीं है । लेकिन जीवन में तुलनात्मक रूप से अधिक हासिल करने की चाहत के कारण कुछ मनुष्यों में लालची मन विकसित हो जाता है जिसके कारण उसके मन और चरित्र पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और अधिकतर समय उसके सोचने का तरीका स्वार्थी तरीके से चलता रहता है ऐसे में लालची लोग समाज की भलाई नहीं देख पाते।

इस संदर्भ में किसी विशेष पेशे के कुछ व्यक्तियों को इंगित करना बहुत अनुचित होगा, क्योंकि पेशा किसी को लालची होना नहीं सिखाता, पेशे में किया गया कार्य ही व्यक्ति को लालची बना देता है क्योंकि व्यक्ति अपने पद का लाभ उठाता है और स्वार्थी लालची जरूरतों की पूर्ति के लिए शक्तियों का दुरुपयोग करता है।

लालच के संदर्भ में केवल कुछ वर्ग के लोगों को भी इंगित करना अनुचित होगा।लालच का यह कार्य पद के उत्तराधिकारी या परिवार में किसी भी व्यक्ति द्वारा विकसित किया जा सकता है। मैं यह बताना चाहूंगा कि लालची व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी भी नीचता तक जा सकता है। इस संबंध में उसे यह एहसास नहीं होता कि वह अपने मन की शांति को नष्ट कर रहा है और अपनी मानसिक स्थिरता खो रहा है, क्योंकि उनका दिमाग अधिक हासिल करने के लिए लगातार गलत रास्ते पर काम करता है जो उनकी सीमाओं से परे है।

लालच के ऐसे अवांछनीय कार्य का उसके काम और परिवार पर नकारात्मक प्रभाव पडता है लेकिन लालची इंसान को किसी चीज की परवाह नहीं होती सिर्फ अपनी और अपने इरादों की । वह उन दुष्ट परिणामों का अपनी निजी ज़िंदगी और चरित्र पर बुरा प्रभाव अनदेखा करता है।

कहते हैं कि लालची के लिए बंगला भी एक झोपड़ी की तरह है, क्योंकि उसके पास जो कुछ है उससे वह संतुष्ट नहीं है।

लालच का अंतिम परिणाम यह होता है कि लालची व्यक्ति सदैव गरीब रहता है।

अब यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लालच एक अनैतिक कार्य है और लालची व्यक्ति समाज के लिए वरदान नहीं बल्कि अभिशाप है।

क्रिस्टोफर फर्नान्डीस
सहायक सचिव ग्रेड- II
सामान्य प्रशासन विभाग

जिंदगी का सफरनामा

कब हुई रिटायरमेंट की उम्र पता ही नहीं चला...
कैसे कटा यह सफर पता ही नहीं चला...
क्या पाया...क्या खोया...क्यों खोया...
कब बीता बचपन...कब ढ़ली जवानी...
कब आया बुढ़ापा... पता ही नहीं चला...
लाड़ले बेटे से... कब बन गए पापा...
और कब बने ससुर... फिर नानू... दादू
कब पोता-पोती गोद में आ गए पता ही नहीं चला...
पीछे मुड़कर अतीत झांका...तो पाया
जिंदगी तो दूसरों के कहे अनुसार गुजार दी...
पहले माँ-बाप की चली...फिर बीवी की...
फिर चली बच्चों की... अपनी कब चली
पता ही नहीं चला... दिन... महीनों में...महीने सालों में
कब खिसक गए... पता ही नहीं चला...
कोई कहता सठिया गए... कोई कहता छा गए...
एहसास दिला रहे है... या तारीफ कर रहे...
पता ही नहीं चला...
अब भी आवाज आती है... अब तो समझ जाओ...
क्या समझू... क्या न समझू... पता नहीं चला...
दिल कहता है जवान हूँ... उम्र कहती है नादान हूँ
इसी चक्कर में कब बाल झड़ गए...घुटने घिस गए
चश्मा लग गया और कब सूरत बदली...पता ही नहीं चला
रफ़्ता- रफ़्ता समय बदला... मित्र मंडली बदली
सफर में कितने छुटे... कितने रह गए... पता ही नहीं चला...
कल तक अठखेलियां करते थे मित्रों के साथ
कब सीनियर सिटिजन की लाइन में आ गए
पता ही नहीं चला... बहु... जमाई ...नाती....पोती, खुशियां आईं
कब मुसकुराई उदास जिंदगी... पता ही नहीं चला...
अब तो मन कहता है... रमेश प्यारे...
अब तो जी भरकर जी ले... मन की कर ले
फिर न कहना...कब खत्म हुआ ज़िंदगी का सफर...
पता ही नहीं चला

रमेशलाल एच. राजपूत
वार्फ अधीक्षक, यातायात विभाग

बारिश का मौसम

काम से लौटकर जब मैं घर जा रही थी तब तेज बारिश शुरू हुई। घर पहुंचकर कुर्सी पर बैठकर गरम चाय का मजा ले रही थी और तभी बारिश को देखकर कल्पना की उड़ान को पंख लग गए। न जाने कौन सी कशिश रहती है इन बारिश की बूँदों में जो आसमान की लंबी दूरी तय करके धरती से मिलने आती है। उनके इस प्यार भरे मिलन से चारों ओर से सुहानी खुशबू फैल जाती है। इस बरसात के मौसम में धरती, सुंदर सा चूड़ा पहनकर दुल्हन की तरह सज जाती है। आकाश में निकला इंद्रधनुष्य, दुल्हन की चुनरी बनकर उसके माथे पर खूबसूरती का चार चाँद लगा देता है। आसमान के काले बादल उसकी आँखों का काजल बन जाता है। रंगबिरंगे फल-फूल, पत्ते आदि उसके कपड़े और गहनों का रुप लेते हैं। हवा की लय भरी आवाज और बिजली की गड़गड़ाहट से उसकी बारात में शहनाई और ढ़ोल नगाड़े बज जाते है।

बारिश का मौसम बड़े लोगों से लेकर छोटे बच्चों तक सभी के लिए प्रिय है। इसी बारिश की कुछ यादें हमें अपने बचपन की याद दिलाती है। बचपन में कागज की कश्ती बनाना और उसे पानी में छोड़ना, कभी तेज हवा की बारिश में छाता का उलटा होकर भीग जाना, तो कभी किसी तेज गाड़ी के जाने से कीचड़ कपड़ों पर गिरना यह सब आपने बारिश के दिनों में अनुभव किया होगा। बारिश हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी वजह से हमारी नदियां और तालाब पानी से भरे रहते हैं और हमें पानी मिलता है, जो जीवन के लिए बहुत जरूरी है। हवा और पानी के बिना जीवन असंभव है। वैसे देखा जाए तो बारिश और किसान का बहुत गहरा संबंध है।बारिश की ज्यादा जरूरत उस किसान को होती है जो खेतों में अनाज उगाता है और हमारे लिए अन्नदाता बन जाता है। अगर बारिश हुई तो उसके खेत में खुशहाली लहराती है और नहीं हुई तो एक बड़ी चुनौती बन जाती है। ।

हमारे बहुत सारे त्योहार बारिश से जुड़े हैं, जैसे नागपंचमी , जन्माष्टमी, मुहर्रम, ओणम, रक्षा बंधन, गणेश चतुर्थी, दशहरा आदि । इसी समय चारों ओर खुशी का माहौल छाया रहता है। इस मौसम में घर बैठकर चाय और पकौडे खाने का मजा ही कुछ अलग होता है। कुछ लोग गजल जैसे हलके संगीत का आनंद लेते हैं। शायद बारिश यह एक बहाना है, जहां परिवार के सभी सदस्य घर पर रहकर एक दूसरे के साथ वक्त बिताते है । आजकल हम हमारे पास जो नहीं है उस पर लक्ष्य केंद्रित करते हैं। ऐसे में जिंदगी का लाभ नहीं उठा पाते। प्यार भरी वर्षा इस प्रकृति में यौवन भरता है और हमें जिंदा बनाता है। यह बारिश हमारे लिए एक वरदान है और खुशियों का आरंभ करने वाला ऋतु है। अगर हम गौर करें तो प्रकृति का हर क्षण खुशहाली और समृद्धि बनाने के लिए आता है। बारिश हमें सिखाता है कि भक्ति के कितने भी मार्ग हो , अंत में हमें एक ही ईश्वर के चरणों में समा जाना है जैसे धरती पर गिरी बारिश की हर बूँद नदी में गिरकर समन्दर बन जाता है। संस्कृत का एक श्लोक याद आता है :

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।।

ट्विंकल परब,
सहायक प्रयोगशाला तकनीशियन,
चिकित्सा विभाग

आपका समय क्षेत्र पहचानें, अपनाएं, और मार्गदर्शन करने दें।

एक व्यक्ति किसी न किसी समय स्वयं से यह प्रश्न पूछता है, ''मैं क्यों पिछड़ रहा हूँ, जबकि अन्य लोग अपना लक्ष्य प्राप्त कर रहे हैं ?''

सफलता प्राप्त करना एक ऐसी यात्रा है जिसमें समर्पण, दृढ़ता और स्वयं की गहरी समझ की आवश्यकता होती है। अक्सर सफलता की राह तब आसान हो जाती है जब कोई व्यक्ति अपने ''समय क्षेत्र'' में होता है - एक ऐसी अवधि जब उनका कौशल, मानसिकता और परिस्थितियां सामंजस्यपूर्ण रूप से संरेखित होती हैं।

आपका समय क्षेत्र आपके जीवन के एक ऐसे चरण को संदर्भित करता है जहां आपकी प्रतिभा, जुनून और परिस्थितियां आपस में मिलती हैं। यह एक ऐसी अवस्था है जहां आप अपने लक्ष्यों और आकांक्षाओं के साथ तालमेल महसूस करते हैं। इस अवधि के दौरान, आप निर्णय लेने, जोखिम लेने और अपनी ऊर्जा को प्रभावी ढंग से उजागर करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं। अपने समय क्षेत्र की पहचान करने में अपनी ताकत को पहचानना, अपने लक्ष्यों का आकलन करना और उन बाहरी कारकों को समझना शामिल है जो आपकी यात्रा को प्रभावित कर सकते हैं।

किसी चीज़ के प्रति जुनून होना एक बात है और उसके प्रति काम करना दूसरी बात है। जुनून आपके सफल होने के अभियान को बढ़ावा देता है। जब आप अपने कार्य के प्रति कटिबद्ध होते हैं, तो आपकी प्रतिबद्धता और उत्साह दृढ़ हो जाता है। आपका समय क्षेत्र आपके जुनून के साथ एक नाजुक संबंध द्वारा चिह्नित है, जिसमें आप अपनी ऊर्जा को उन गतिविधियों में लगा सकते हैं जो आपकी अंतरतम इच्छाओं से मेल खाती हैं। चाहे आप एक छात्र हो, कर्मचारी हो, कलाकार हो, उद्यमी हो या वैज्ञानिक हो, अपने समय क्षेत्र के भीतर अपने कार्यों को अपने जुनून के साथ संरेखित करने से सफलता और नवीनता प्राप्त हो सकती है।

किसी के पास कौशल सेट हो और फिर भी उसका उपयोग न कर पाना निराशाजनक है। कौशल वे उपकरण हैं जो आपको अपना दृष्टिकोण प्रकट करने में सक्षम बनाते हैं। आपके समय क्षेत्र के दौरान, आपको कौशल विकास और परिशोधन में वृद्धि का अनुभव होने की संभावना है। जैसे-जैसे आप अपने लक्ष्यों के अनुरूप कार्यों में खुद को उतारते हैं, आपके कौशल स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं, जिससे आपको अपने चुने हुए क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद मिलती है। कौशल वृद्धि की यह अवधि सफलता प्राप्त करने के लिए अभिन्न अंग है, क्योंकि यह आपको आत्मविश्वास और सरलता के साथ चुनौतियों से निपटने के लिए सशक्त बनाती है।

किसी व्यक्ति के वास्तविक व्यक्तित्व का आकलन तब तक नहीं किया जा सकता जब तक उसे खुद को आगे बढ़ाने और अपनी क्षमताओं को प्रस्तुत करने का अवसर न मिले। अवसर प्रचुर हैं, लेकिन सही को पहचानने के लिए स्पष्ट मानसिकता की आवश्यकता होती है। जब आप अपने समय क्षेत्र में होते हैं, तो आपका अंतर्ज्ञान बढ़ जाता है, जिससे आप उन अवसरों को पहचान पाते हैं जो आपके उद्देश्यों के अनुरूप होते हैं। इसके अलावा, इस चरण के दौरान आपके परिकलित जोखिम लेने की अधिक संभावना है, जिससे व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास होगा। जब आप अपने समय क्षेत्र के साथ तालमेल बिठा लेते हैं तो अनिश्चितता को अपनाना कम कठिन हो जाता है।

सफलता की राह पर चुनौतियां अपरिहार्य हैं, लेकिन आपका समय क्षेत्र आपको उनका सामना करने और उन पर विजय पाने के लचीलेपन से सुसज्जित करता है। इस अवधि के दौरान, आपके पास कौशल, अनुभव और मानसिकता का एक अनूठा मिश्रण होता है जो आपको नवीन समाधान तैयार करने में सक्षम बनाता है। आपका समय क्षेत्र समस्या-समाधान के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, जो बाधाओं को उपलब्धि की ओर ले जाता है।

सफलता प्राप्त करना समर्पण, दृढ़ता और आत्म-जागरूकता की पराकाष्ठा है। आपका समय क्षेत्र एक महत्वपूर्ण कारक है जो आपके प्रयासों को बढ़ा सकता है और आपको अपने लक्ष्यों की ओर प्रेरित कर सकता है। अपने जुनून को अपनाकर, अपने कौशल को अधिकतम करके, अवसरों का लाभ उठाकर और चुनौतियों पर काबू पाकर, आप अपने समय क्षेत्र की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं और सफलता की ओर एक परिवर्तनकारी यात्रा कर सकते हैं। याद रखें, आपका समय क्षेत्र एक गतिशील चरण है - इसे पहचानें, इसे अपनाएं, और इसे अद्वितीय उपलब्धियों की ओर आपका मार्गदर्शन करने दें।

राजाराम वासुदेव गडेकर
वरिष्ठ लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग

पृथ्वी माँ

जमीन, आकाश, वायु, अग्नि, पानी इन पंचतत्वों से आत्मा और शरीर की उत्पत्ति होती है । सौरमंडल का एकमात्र ग्रह पृथ्वी, मानव तथा अन्य सजीव प्रजातियों को संभालती है। पृथ्वी की हवा, पानी और जमीन के कारण यह संभव हुआ है। सभी ग्रहों में एकमात्र पृथ्वी माँ है जिस पर जीवन की आधारशिला टिकी हुई है। पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु अनूठी है जो हमें सौंदर्य के रूप में नजर आती है, सूर्य की लालिमा, पर्वत, सागर, झील, झरने, नदियां, सागर, हरियाली आदि । न जाने क्या- क्या दिया है हमें इस धरती मां ने, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं । इतने एहसानों के बावजूद भी बदले में हम प्रदूषण और गंदगी बढ़ा रहे हैं और धरती के सौंदर्य को खत्म कर रहे हैं।

पेड़ पौधों को काटकर हम जंगलों का विनाश कर इस हरी भरी धरती को बंजर बनाने में लगे है। हम जितना धरती के साथ खिलवाड कर रहे हैं उतने ही भयानक परिणाम हमें एक दिन भुगतने पड़ेंगे। धरती माता की उपजाऊ जमीन हमारे लिए अन्न सब्जियां, फल पैदा करती हैं। हम बीमार होने पर इसी धरती पर औषधि और जडी- बुटी मिलती है। पीने योग्य पानी के स्रोत देती है। अमृत तुल्य पानी हमें पृथ्वी माँ उपलब्ध करती है लेकिन स्वार्थी मनुष्य इसे व्यर्थ बहाता है और दूषित भी करता है। इसके भयानक असर हमारी धरती पर ही पड़ते है। पृथ्वी के अन्न, जल से हमारे शरीर का विकास होता है और उसी के साथ हम ऐसा बर्ताव कर रहे हैं, यह निंदनीय है। हमें धरती को बचाने का प्रयास समन्वित रूप से करने की आवश्यकता है। सांस लेने के लिए ताजी हवा और मन को शांति प्रदान करने वाले मनोहारी दृष्य हमारी पृथ्वी माँ की देन है। इस तरह धरती माँ हमारी साझी धरोहर है। इसके संरक्षण एवं संतुलन के लिए हमें प्रयास करने चाहिए। जिस तरह एक माँ अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है उसी तरह धरती माँ सभी पृथ्वी वासियों को जीवन प्रदान करती है।

हर वर्ष 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाकर इस दिशा में कुछ सार्थक कदम उठाए जाते हैं ताकि इससे लोग जागरूक बने । हमें इस दिन को औपचारिक बनाने की बजाय स्वयं का कर्तव्य समझते हुए धरती को दूषित होने से बचाने के लिए आगे बढ़ना है तथा अन्य लोगों को भी इस दिशा में प्रेरित करना है । इस तरह मतलबी लोगों के व्यवहार में भी बदलाव लाना होगा । पृथ्वी पर बसने वाले स्वार्थी लोगों को इस बात का एहसास होना चाहिए कि उनकी करतूतों की वजह से धरती माँ कितना दु:ख झेल रही है ।

पृथ्वी ग्रह ने एक माँ की भांति बिना किसी स्वार्थ के मानव को जीवन के लिए सब कुछ दिया है। अन्न, जल, शुद्ध हवा, वृक्ष, हरियाली, पर्वत, समुद्र, फल, सब्जियाँ आदि। पृथ्वी के इस परोपकार के बदले हम प्लास्टिक, रासायनिक जहर और प्रदूषण की सौगात अपनी धरती माँ को दे रहे हैं। मानव की प्राकृतिक संसाधनों का विनाश करने वाली गतिविधियाँ पृथ्वी के वातावरण को बहुत बुरी तरह से प्रभावित कर रही है। हमारी स्वयं की जिम्मेदारी है कि हम पर्यावरण के अनुकूल गतिविधियों को अपनाकर पृथ्वी को बचाएं। आज हमारी पृथ्वी प्रदूषण ग्रस्त हो गई है। चारों तरफ प्रदूषण ही प्रदूषण है, चाहे वह जल हो, वायु हो या मृदु , सब कुछ प्रदूषण के चक्र में फँसकर रह गए है। वाहनों, मोटरों, उद्योगों व मनुष्य की कई सुविधाओं से इस प्रकृति में प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ गया है। जिससे पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है और मनुष्य को इसके घातक परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं। आज के समय में 'वसुधैव कुटुंबकम' के दौर में पूरी पृथ्वी एक परिवार है और इस पृथ्वी पर रहनेवाले सभी मनुष्य और जानवर एक ही परिवार का हिस्सा है, तो इसे साकार करने के लिए पृथ्वी के लिए समर्पित होकर जो अच्छा है वही करना है वरना विनाश अटल है। जब जागो तभी सवेरा ।

सुहासिनी भा. नाईक
प्रधान लिपिक
सिविल इंजीनियरी विभाग

अधिक मास

हिंदू कैलेंडर में हर तीन साल में एक बार एक अतिरिक्त माह आता है, जिसे अधिक मास कहते हैं। इस बार सावन में अधिक मास का संयोग बना है। इसे मलमास, पुरुषोत्तम मास के नाम से भी जाना जाता है।

अंग्रेजी कैलेंडर में लीप ईयर होता है और हिंदू पंचांग में अधिक मास । लीप ईयर में सिर्फ एक दिन बढ़ता है जबकि अधिक मास के कारण हिंदू वर्ष में पूरा एक महीना बढ़ जाता है। अंग्रेजी कैलेंडर पृथ्वी की सूर्य की परिक्रमा के आधार पर चलता है। एक अंग्रेजी साल में 365 दिन होते हैं और लीप ईयर में 366 दिन होते हैं। इसकी वजह यह है कि पृथ्वी को सूर्य की पूरी परिक्रमा लगाने में 365 दिन और करीब 6 घंटे का समय लगता है। हर चार साल में यह अतिरिक्त 6 घंटे एक दिन के बराबर हो जाते हैं। इस एक दिन को हर चौथे साल में कैलेंडर में बढ़ाया जाता है। इस कारण सामान्य साल में 365 दिन और लीप ईयर में 366 दिन होते हैं। लीप ईयर मालूम करने का तरीका यह है कि जिस वर्ष को अंक 4 से विभाजित किया जा सकता है वह लीप ईयर होता है।

हिंदू पंचांग में अधिक मास तीन साल में एक बार आता है। वह साल 13 महीनों का होता है। हिंदू पंचांग में काल गणना सूर्य और चंद्र के आधार पर की जाती है। जब चंद्रमा 12 राशियों का पूरा चक्कर लगा लेता है तब एक चांद्र माह होता है। चंद्रमा को 12 राशियों का चक्कर लगाने में करीब 28-29 दिन लगते हैं। इस कारण हिंदू पंचांग का एक चांद्र वर्ष 354.36 दिन का होता है। सूर्य एक राशि में 30.44 दिन रहता है और 12 राशियों का एक चक्कर 30.4412 = 365.28 दिन में होता है। इसे सौर वर्ष कहते है । सौर और चांद्र वर्ष में 10.92 दिन (365.28-354.36) का अंतर आ जाता है। इस अंतर के कारण पंचांग में हर 32 महीने और 14-15 दिन के बाद अधिक मास रहता । अधिक मास कभी भी पूर्णिमा से शुरू नहीं होता। अमावस्या के बाद ही शुरु होता है। 32 महीने और 15 दिन के बाद जिस महीने की अमावस्या है, उसी महीने का अधिक मास होगा।

एक चांद्र वर्ष 354 दिन और सौर वर्ष 365 दिन का होता है। इन दोनों के अंतर को खत्म करने के लिए अधिक मास की व्यवस्था ऋषि-मुनियों ने की थी। हमारे तीज-त्योहार ऋतुओं के आधार पर मनाए जाते है। अगर अधिक मास की व्यवस्था नहीं होती तो सभी त्योहार और ऋतुओं के बीच का तालमेल बिगड़ जाता। जैसे सावन बारिश के दिनों में आता है, लेकिन अगर अधिक मास नहीं होता तो सावन कभी ठंड के दिनों में और कभी गर्मी के दिनों में आता । अधिक मास की वजह से हिंदू पंचांग और ऋतुओं के बीच का तालमेल बना रहता है।

अधिक मास को भगवान विष्णु ने अपना नाम पुरुषोत्तम दिया है, इस कारण इसे पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं। अधिक मास में भगवान विष्णु जी और उनके अवतार श्रीकृष्ण , श्रीराम की पूजा खासतौर पर करते है। अधिक मास भगवान विष्णु को प्रिय है। इस बार अधिक मास सावन में आया है, इसलिए इस माह भगवान शिवशंकर जी की पूजा भी बहुत लाभदायक है। पूजा पाठ के अलावा इस महीने में तीर्थ दर्शन, नदी स्नान, ग्रंथों का पाठ, प्रवचन सुनना, मंत्र-जप, ध्यान, दान-पुण्य आदि शुभ काम कर सकते है। भगवान विष्णु से जुड़े धार्मिक अनुष्ठान, विशेष रूप से भागवत – पाठ, रामायण पाठ, गीता पाठ आदि करना या कराना बहुत शुभ माना गया है। अधिक मास में की गई पूजा पाठ, यज्ञ, व्रत उपवास आदि अन्य महीनों के मुकाबले ज्यादा फलदायी होते हैं।

गजेश आर. एस. तळावलीकर
सहायक का. अभियंता (यंत्रिक)
समुद्री विभाग

जिंदगी

जन्म से जो शुरु हुई , जीवन लम्हों की गिनती,
हर सांस और हर क्षण की गजब है यह दोस्ती,
अटूट रिश्ता इन दोनों का ऐसा बनता,
जीवन यात्रा तभी सफल हो पाती ।

हर एक लम्हा, हर एक पल ,
हर एक रिश्ता , मोह या छल,
अच्छे-बुरे का सिखाता है सबक,
सच-झूठ की करवाता है परख।

खुशी का लम्हा छोटा ही सही,
दुख के पल भी सदा नहीं स्थायी,
सदैव दुर्भाग्य से होगा न मिलन,
कभी न कभी सौभाग्य से भरे होंगे क्षण ।

अच्छी यादों को मन में संजोते हुए ,
एक दूसरों को खुशियाँ बांटते हुए,
अपनी जीवन यात्रा होगी मंगलमय,
दुष्ट प्रभावों का होगा प्रलय।

हौसले और आशाएँ, रखें न सीमित,
निरंतर प्रयास से मिलेगी जीत,
उड़ान भर लेनी है आसमान छूने की ,
थोडे से लम्हें, थोडे पल, छोटी-सी अपनी जिंदगी ।

एडीसन फर्नांडीस
सिले. ग्रेड लिपिक
यांत्रिक इंजीनियरी विभाग

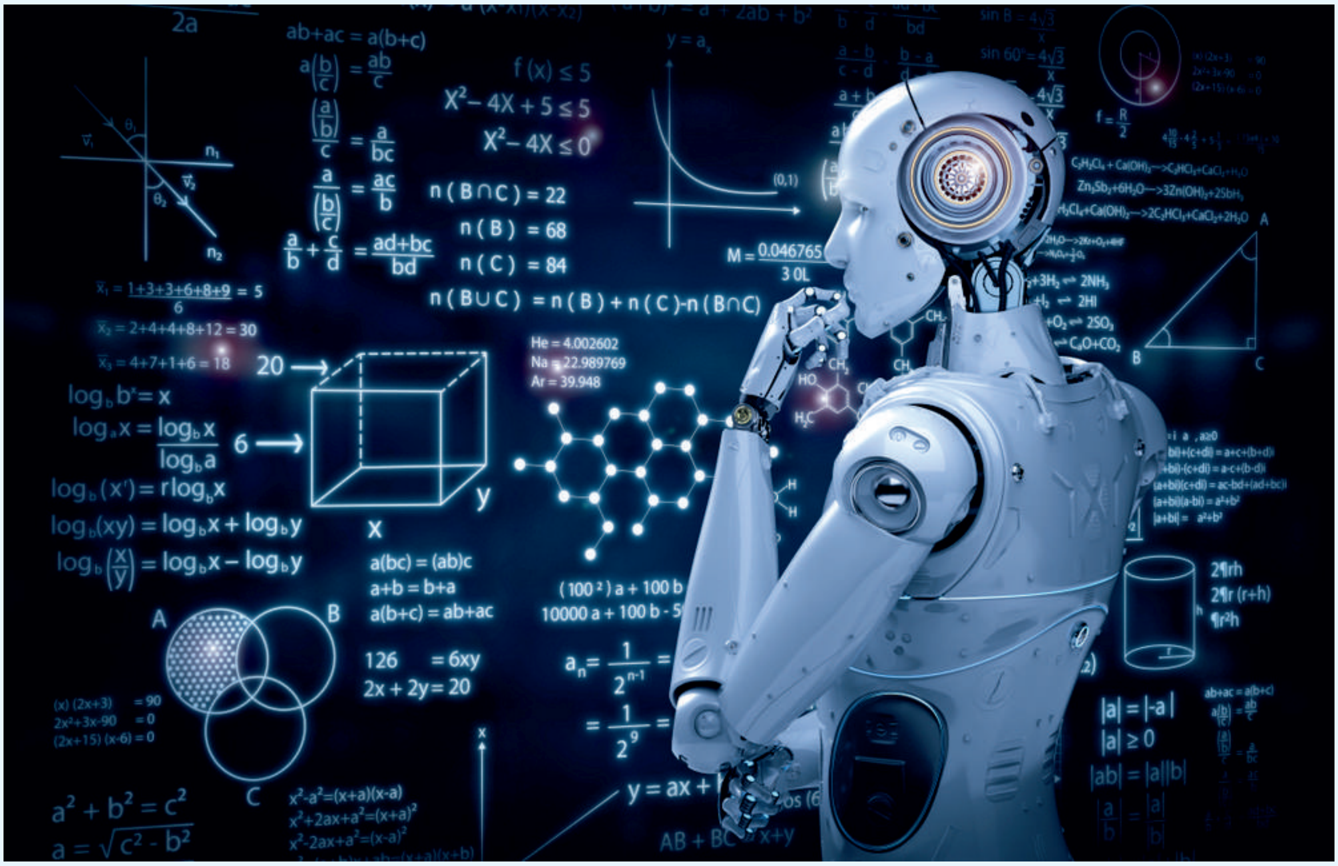

शिक्षा प्रणाली में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस - AI)

"Technology is a useful servant but a dangerous master"
(तकनीक एक उपयोगी नौकर है, लेकिन एक खतरनाक मालिक है।) - क्रिस्चियन लूस लैंगे

यह उस दिन की बात है जब छात्रों को अपने असाइनमेंट जमा करने के लिए कहा गया। जैसे ही शिक्षक ने बच्चों से असाइनमेंट जमा करने के लिए कहा, वे चौंक गए। पहली बार, पूरी कक्षा ने पहले ही कोशिश में अपने असाइनमेंट जमा कर दिए थे। शिक्षक को इस पर गर्व हुआ। लेकिन जैसे ही उन्होंने असाइनमेंटों का मूल्यांकन शुरू किया, वे और चौंक गए। जितने भी असाइनमेंट उन्होंने जांचे, वे सभी उच्च स्तर के थे। उन्होंने एक पल के लिए सोचा कि बच्चे बहुत सुधर गए हैं। जब उन्होंने अगले असाइनमेंट को जांचा, तो यह कहा, "Surely, as a chatbot (Chat GPT) I can help you with your assignment"। वे समझ गए कि बच्चों ने हर लाइन को Chat GPT से कॉपी किया था। इसलिए उन्हें गुस्सा आया और वे छात्रों की रातों रात की सफलता का रहस्य भी जान गए।

हमने एक ऐतिहासिक युग देखा है, जहाँ मनुष्य शक्ति का एकमात्र स्रोत था और अब हमने एक आधुनिक तकनीकी युग में कदम रखा है, जहाँ तकनीक दुनिया पर राज करती है। यह उल्लेखनीय है कि एक समय था जब एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में कई दिन लगते थे, लेकिन आज हम उसी समय या उससे भी कम समय में चंद्रमा पर पहुँच सकते हैं। हाँ, तकनीक ने हमारे जीवन को बहुत प्रभावित किया है। आजकल चर्चा का विषय बनी हुई एक तकनीक है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)।

Chat GPT एक AI भाषा मॉडल है। यह प्रयोक्ता के इनपुट के आधार पर मानव-सदृश पाठ उत्पन्न करता है। यह कुछ इस तरह है कि यदि मैं इसे कोई प्रश्न पूछता हूँ, तो यह प्रश्न का उत्तर ठीक वैसे ही देगा जैसे कोई इंसान देगा।" Chat GPT के उपलब्ध होने के बाद से, विभिन्न क्षेत्रों के लोगों, विशेष रूप से शिक्षाविव्दानों के बीच इसके लाभ और इसकी परिसीमा पर बहस हो रही है। हालांकि बहस का परिणाम अलग-अलग है, लेकिन कई लोग चिंतित हैं कि यह तकनीक बच्चों के लिए बहुत शक्तिशाली है।

आम तौर पर बच्चों को सीखने के लिए पाँच चरण होते हैं। वे हैं स्मरण, समझना, लागू करना, विश्लेषण, मूल्यांकन, और रचना। पहले 3 चरण शिक्षक द्वारा सुविधाजनक होते हैं, जबकि अगले तीन चरण ज्यादातर छात्र के अध्ययन के तरीके से जुड़े होते हैं।दुर्भाग्यवश, "Chat GPT" छात्रों की मदद करता है और उन्हें इन सभी चरणों में सुविधा प्रदान करता है, लेकिन इससे छात्रों की विचार करने, अन्वेषण करने, और सृजन करने की क्षमता कम हो जाती है। यह बच्चों की सृजनात्मकता को खत्म

कर देता है और उन्हें पूरी तरह से डिजिटल उपकरण पर निर्भर करने पर मजबूर कर देता है।

इस बहस का कारण क्या है ? क्या पहले बच्चे तकनीक का उपयोग नहीं करते थे ? हाँ, यह सत्य है कि बच्चे पहले भी गूगल जैसे उपकरणों का उपयोग करते थे। लेकिन उस मामले में, गूगल खोज अनेक विकल्प देता था जिससे उचित जानकारी प्राप्त करने के लिए बच्चे को व्यापक रूप से पढ़ना पड़ता था। यह प्रक्रिया बच्चों को उचित चयन करने और उनके अनुसंधान कौशल को बढ़ावा देने में सहायता करती थी।

क्या आप उस दिनों को याद करते हैं जब हम अपने प्रियजनों के फ़ोन नंबरों को आसानी से याद करते थे ? लेकिन आजकल हमारी स्मरण शक्ति कम होती जा रही है। हम अब पूरी तरह से Google Calendar जैसे ऐप्स पर निर्भर हैं जो हमें हमारे प्रियजनों के ख़ास दिनों को याद दिलाने के लिए रिमाइंड करते हैं। डिजिटल उपकरण हमारे जीवन का एक हिस्सा बन गया है । हम अपनी याददाश्त खो चुके हैं। अगर हम बच्चों को पूरी तरह से Chat GPT पर निर्भर करने देते हैं तो वह दिन दूर नहीं है जब हम सोचने की क्षमता खो देंगे।

अब क्या करें ? क्या हम छात्रों को AI उपकरण का पूरी तरह से इस्तेमाल करने से पूरी तरह रोक दें ? इस सवाल का जवाब देना कठिन है। एक ओर हां, लेकिन दूसरी ओर इसने हमारे जीवन को आसान भी बना दिया है। क्योंकि यह हमारे काम को स्वचालित करता है। साथ ही, दिन प्रतिदिन AI के उपकरण बढ़ते जा रहे हैं। इसलिए पूरी तरह से प्रतिबंध करना सही विकल्प नहीं है। इसके बजाय, हमें सतर्क शिक्षार्थी बनने की जरूरत है। हमें इन डिजिटल उपकरणों के माध्यम से अपने जीवन को संचालित करना सीखना चाहिए। अंततः यह पूरी तरह से हम पर निर्भर करता है कि हम इन उपकरणों का उचित रूप से इस्तेमाल कैसे करते हैं ।

ध्यान रहें कि ये एआई उपकरण मनुष्यों द्वारा मनुष्यों की मदद के लिए बनाए गए हैं। कुछ ऐसे उपकरण हैं जैसे 'AI Email Generator' जो हमारे लिए ईमेलों का त्वरित जवाब देते हैं, और 'Grammarly' जैसे उपकरण जो हमारी टाइप की गई भाषा का व्याकरण स्वतः सुधारते हैं। यदि इनका विवेकपूर्वक उपयोग किया जाए, तो हम काफी समय बचा सकते हैं और कुशल हो सकते हैं। यदि नहीं,तो हम इन डिजिटल उपकरणों की हर बात के लिए गुलाम बन जाएंगे। इसीलिए एक बच्चा अपने आप ही AI को संभाल नहीं सकता।बच्चों को इन उपकरणों का बुद्धिमानी से उपयोग करने हेतु सक्षम बनाने में माता-पिता और शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जब कोई कार्य दिया जाता है तो बच्चों को खुद पर विश्वास हो। पहले, उन्हें खुद ही कार्य को पूरा करने देना चाहिए और फिर उन्हें बाह्य माध्यम का उपयोग एक सहायक के रूप में करने की सीख देनी चाहिए।

इस AI तकनीक के कई लाभ हैं, लेकिन हमें शिक्षा के मार्ग में तकनीक को आने न देने और अगली पीढ़ी की बुद्धिमत्ता को कमजोर करने नहीं देना चाहिए । आत्म निर्भरता ठीक है, लेकिन इसपर अधिक निर्भरता भी सही नहीं है ।

अगले दिन शिक्षक ने छात्रों को डांट दिया और सुनिश्चित किया कि इस बार पूरी कक्षा असाइनमेंट को शिक्षक की निगरानी में फिर से लिखते हैं ।

विंस्टन सैम्युअल राज विश्वनाथन
सुपुत्र – श्रीमती रोज जेबा कुमारी,
लेखाकार, वित्त विभाग

जीवन को बेहतर बनाएं।

तकनीकी और तेज रफ्तार जिंदगी के आधुनिक युग में इंसान के पास यह सोचने के लिए बहुत कम मिनट हैं कि बेहतर से बेहतर जीवन कैसे जिया जाए। संत रामदास स्वामी ने दास बोध नामक एक मराठी ग्रंथ में अपने 32 छंदों में मानव जाति को अपने जीवन को बेहतर बनाने का संदेश दिया है, जिसे मैं सभी की जानकारी के लिए यहां पुन: प्रस्तुत कर रहा हूं:

श्री समर्थ कहते हैं कि हमारा स्वरूप और भाव अभ्यास से प्राप्त नहीं होता, क्योंकि वे जन्मजात हैं. जिसका कोई समाधान नहीं है, इसलिए हमें अच्छे गुण आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। एक काला आदमी सफ़ेद नहीं हो सकता, जन्मचिह्न, आदि हटाया नहीं जा सकता। गूंगा व्यक्ति बोल नहीं सकता, क्योंकि यह उसका स्वाभाविक गुण है। अंधा आदमी देख नहीं सकता, बहरा व्यक्ति सुन नहीं सकता, अपंग व्यक्ति चल नहीं सकता। यह उनका सहज गुण है। जड़, जो रूप और आकार है, उसे बदला नहीं जा सकता है। लेकिन अवगुण छोड़े जा सकते हैं, अध्ययन से अच्छे गुण अंगीकृत किए जा सकते हैं। बुद्धिमान लोग वे हैं जो अज्ञान को त्याग देते हैं और ज्ञान सीखते हैं। यदि आप मूर्खता छोड़ दें तो वह दूर हो जाती है। अच्छी आदतें सीखने से ज्ञान आ सकता है। जब आप व्यापार या कोई व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं तो आपको इसकी सारी बारीकियां पता करनी जरूरी होती हैं। मनुष्य पूरे दिल से महानता को पसंद करता है, तो इन बातों को अनदेखा क्यों करें?

जब आप सही मार्ग पर चलते हैं तो आपको लोगों और सज्जनों की स्वीकृति मिलती है। भले ही शरीर कोई भी कार्य करने के लिए बाहर से अच्छी तरह से तैयार हो, लेकिन अगर शरीर में प्रतिभा नहीं है तो यह बेकार है। यह बिना किसी गुण के साधारण व्यक्ति को अलंकृत करने जैसा है। हम दूसरों के साथ जैसा व्यवहार करते हैं, हमें उनकी प्रतिक्रियाएँ भी मिलती हैं। अगर हम लोगों को ठेस पहुंचाएंगे तो हमें बहुत नुकसान होगा। जो न्यायपूर्वक कार्य करता है वह बुद्धिमान है। जो अन्यायपूर्ण कार्य करता है वह अविचारी है। जो चतुर है वह चतुराई के लक्षण जानता है। जिसे अनेक लोग स्वीकार कर लेते हैं, वह सर्वमान्य हो जाता है। चाहे लोग आपसे खुश हों या आपके खिलाफ, वही करें जो आपको अच्छा लगे। मन की संतुष्टि से आत्मविश्वास बढ़ता है। अच्छाई को ख़त्म करने के लिए एक पल भी काफी होता है। यदि हम दूसरों का सम्मान करते है, तो बदले में आदर व सम्मान प्राप्त होता है। कोई अच्छे गुण आत्मसात कर सात्विक विचारों से अपने अंदर की, अपने मन की सुंदरता को निखारते है तो कोई सुंदर वस्त्र पहनकर अपने शरीर को सजाता है। इन दोनों में श्रेष्ठ कौन हो, इसका विचार करना ही श्रेयस्कर है। अपने सद्गुणों एवं सद्व्यवहार से यदि हम दूसरों को खुशी देते है तो हम भी खुश हो जाते है।। यदि हम दूसरों को कष्ट देते हैं तो हमें भी कष्ट सहना पड़ता है। यह तो स्पष्ट है कि समुचित ज्ञान के बिना कोई भी कार्य नहीं हो सकता। जो लोग किसी भी विषय की अच्छी समझ रखते हैं और उसके अनुसार कार्य करते हैं, वे मनुष्य सफलता की और बढ़ते है व भाग्यशाली बनते हैं। तो समाधान यही है कि हम किसी भी चीज को अच्छी तरह समझें और ठीक से कार्य करें। किसी भी चीज़ में आलस्य करने से काम नहीं चलता। निरंतर प्रयास से सफलता मिलती है। जो यह बात देखकर भी नहीं समझता, उसे बुद्धिमान कैसे कहा जा सकता है? वह जो स्वयं को बुद्धिमान नहीं बना सकता; जो व्यक्ति अपने हित की बात नहीं जानता, लोगों से मित्रता करना नहीं जानता तथा लोगों से शत्रुता रखता है, उसे अज्ञानी कहना चाहिए। जो अकेला है और सबसे लड़ता है, वह चारों तरफ से सफल कैसे हो सकता है? इसलिए कई लोगों की मदद करके आदर व नाम कमाएं।

रामेश्वर कुबल
श्रम निरीक्षक
सामान्य प्रशासन विभाग

पत्तन में आयोजित गतिविधियां- एक नजर

इंजीनियर्स दिवस

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने दिनांक 15.09.2022 को इंजीनियर्स दिवस मनाया। प्रोफेसर डॉ.आर.पी. प्रधान, एसो. प्रोफेसर, बिट्स पिलानी/गोवा मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता थे। एमपीए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. ए.वी. रमणा ने अपने भाषण में श्री एम. विश्वेश्वरैया के संस्थापक आदर्शों के अनुरूप आधुनिक भारत के निर्माण में इंजीनियरों की भूमिका पर प्रकाश डाला।

दिनांक17.09.2022 को भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी के 72 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने दिनांक 16.09.2022 को मुरगांव पत्तन प्राधिकरण अस्पताल में एहतियात खुराक कोविड टीकाकरण शिविर और वृक्षारोपण का आयोजन किया।

स्वच्छता अभियान 2.0 - 02.10.2022 - 31.10.2022 / स्वच्छ भारत अभियान

भारत सरकार के निर्देशों के अनुपालन में दिनांक 02.10.2022 को एमपीए के उपाध्यक्ष श्री जी.पी. राय ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद विशेष स्वच्छता अभियान 2.0 शुरू किया।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा सीआईएसएफ और दीपविहार हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों सहित विभिन्न विभागों में दिनांक 02.10.2022 से 31.10.2022 तक स्वच्छता अभियान – 2.0 चलाया गया। इस अवसर पर एमपीए द्वारा स्वच्छता शपथ ली गई और एकल उपयोग प्लास्टिक के उन्मूलन पर बैनर प्रदर्शन भी किया गया।

एमपीए परियोजनाओं और एनएमपीए परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन (लोकार्पण)

दिनांक 13.10.2022 को श्री सर्बानंद सोनोवाल, माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग और आयुष केंद्रीय मंत्री, साथ ही गोवा के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत और श्री श्रीपाद नाईक, माननीय पीएसडब्ल्यू और पर्यटन राज्य मंत्री द्वारा एमपीए परियोजनाओं और एनएमपीए परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन (लोकार्पण) व साथ ही मांडोवी नदी पर नवनिर्मित 4 फ्लोटिंग जेटी और सोलर फेरी का भी उद्घाटन (लोकार्पण) किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह का आयोजन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2022 का उद्घाटन समारोह दिनांक 31 अक्तूबर 2022 को मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के बोर्ड रूम में आयोजित किया गया । पूर्व अध्यक्ष एनएमपीए और एमपीए ने पत्तन के सभी वरिष्ठ अधिकारियों को वीडियो लिंक के माध्यम से सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा दिलाई। सीवीओ ने एचओडी को अपने-अपने विभागों में सत्यनिष्ठा शपथ दिलाने का निर्देश दिया। उन्होंने विभागाध्यक्षों को अपने कर्मचारियों को सतर्कता जागरूकता सप्ताह -2022 के भाग के रूप में आयोजित की जाने वाली विभिन्न जागरूकता गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करने का भी निर्देश दिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2022 के एक भाग के रूप में, चिकालिम पंचायत ने एमपीए के सहयोग से और एमईएस कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, जुआरीनगर की सक्रिय भागीदारी के साथ, ''विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत'' विषय पर चिकालिम पंचायत हॉल में एक जागरूकता ग्राम सभा का आयोजन किया। श्री विजय दत कगीता, आईओएफएस, सीवीओ / एमपीए, चिकालिम के सरपंच श्री के.पी. यादव, डॉ. (श्रीमती) मनस्वी कामत, प्रिंसिपल, एमईएस कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, और श्री आशीष कुमार, एसपी, सीबीआई/ गोवा मुख्य वक्ता थे । एमईएस कॉलेज की ओर से भ्रष्टाचार विरोधी नाटक प्रस्तुत किया गया। जागरूकता ग्राम सभा में चिकालिम के ग्रामीणों, गैर सरकारी संगठनों के साथ-साथ बड़ी संख्या में छात्रों ने भाग लिया। एमपीए ने दिनांक 01.11.2022 को अंतर विभाग प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई । इसमें 7 विभागों ने भाग लिया।

दि. 04.10.2022 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022 का समापन समारोह संपन्न हुआ । श्री वी.वी. लक्ष्मी नारायण, आईपीएस, एडीजीपी (सेवानिवृत्त), पूर्व जेडी और सीबीआई, हैदराबाद ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई। डॉ. ए. वी. रमण, तत्समयी अध्यक्ष, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण, श्री जी. पी. राय, उपाध्यक्ष, एमपीए और सीवीओ इस अवसर पर उपस्थित थे व साथ ही सभी विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी और पत्तन कर्मचारी भी उपस्थित थे। सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। पत्तन कर्मचारियों द्वारा एक नाटक भी प्रस्तुत किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। इसके बाद सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022 विषय पर 'कर्पशनाचो बाजार' नामक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

संसदीय राजभाषा समिति का दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के माननीय सदस्यों ने मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के साथ दि. 14-11-22 को होटल वेस्टईन, अंजुना, गोवा में राजभाषाई निरीक्षण बैठक की । मुरगांव पत्तन के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सभी विभागाध्यक्षों ने बैठक में सहभाग लिया।

संविधान दिवस का अयोजन

दिनांक 26.11.2022 को संविधान दिवस के उपलक्ष्य में और कर्मचारियों के बीच संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए, एमपीए ने दिनांक 25.11.2022 को संविधान दिवस के रुप में मनाया । उपाध्यक्ष श्री जी.पी. राय ने विभागाध्यक्षों, पत्तन के वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ प्रस्तावना पढ़ी।

मुरगांव पत्तन के दीपविहार हाई स्कूल में भी संविधान दिवस मनाया गया और छात्रों और शिक्षकों द्वारा संविधान दिवस पर भाषण दिया गया।

विश्व प्रदूषण निवारण सप्ताह का आयोजन

मुरगांव पत्तन में दि.02.12.2022 से 09.12.2022 तक विश्व प्रदूषण निवारण सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान विविध गतिविधियों, जैसे कि स्थानीय स्कूली छात्रों के लिए जागरूकता व्याख्यान का आयोजन, पोर्टेबल मिस्ट केनन से परिचालन क्षेत्रों में फॉगिंग और आईओसी जंक्शन से वास्को शहर तक सड़क की सफाई कार्य, परिचालन क्षेत्रों में धूल नियंत्रण के लिए पानी का छिड़काव और हेडलैंड सडा जंक्शन से मुरगांव हारबर स्थित गेट नंबर 1 तक सड़क की सफाई, स्थानीय हायर सेकंडरी / कॉलेज के छात्रों के बीच जागरूकता लाने के लिए ''ग्रीन पोर्ट पहल - सौर ऊर्जा'' पर चर्चा- सत्र का आयोजन, ऑपरेशनल स्टाफ के लिए ''ऑईल स्पिल रिस्पॉन्स इक्वीपमेंट पर डेमॉनस्ट्रेशन'' का आयोजन किया गया।

महापरिनिर्वाण दिवस

एमपीए ने दिनांक 06.12.2022 को महापरिनिर्वाण दिवस मनाया। इस अवसर पर कप्तान मनोज जोशी, उप संरक्षक ने अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की।

आज़ादी का अमृत महोत्सव - 2 –विभिन्न गतिविधियां

दिनांक 08.12.2022 को कर्मचारियों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 21.03.2023 को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े सेनानियों के जीवन पर प्रदर्शनी, व्याख्यान और विडीयो फिल्म का आयोजन किया।

दिनांक 21.03.2023 को हाउसकीपिंग स्टाफ के लिए एमपीए अस्पताल में स्वास्थ्य जांच / नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया ।

दि. 26.04.2023 को कर्मचारियों के लिए पोषण और व्यायाम कार्यक्रम का आयोजन ।

दि. 27.04.2023 को ''आत्मरक्षा तकनीक'' गतिविधि का आयोजन ।

एमपीए गोवा ने दि. 09 -01-23 को तत्समयी अध्यक्ष/एमपीए डॉ. ए. वी रमणा, उपाध्यक्ष श्री जी. पी. राय और सभी विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में श्रीनिवास विश्वविद्यालय और श्रीनिवास ग्रुप ऑफ कॉलेजिस, मंगलुरु के साथ उनके छात्रों की इंटर्नशिप हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

गणतंत्र दिवस समारोह

दिनांक 26.01.2023 को एमपीए, गोवा में गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री जी.पी. राय, उपाध्यक्ष थे। सीआईएसएफ कर्मियों को कार्य के प्रति उनके योगदान और समर्पण के लिए प्रशस्ति प्रमाण पत्र प्रदान किए गए, तद्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

क्रूज जहाज एम.वी कोस्टा डेलिज़ियोसा का आगमन

दिनांक 01.02.2023 को 09.50 बजे क्रूज जहाज कोस्टा डेलिज़ियोसा का 1545 यात्रियों और 878 चालक दल के साथ मुरगांव पत्तन में आगमन हुआ। यात्रियों का स्वागत गोवा की संस्कृति को दर्शाते नृत्य और संगीत के साथ किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह समारोह का आयोजन

दि. 8 मार्च अर्थात अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में मुरगांव पत्तन में दि. 27.02.23 – 08.03.23 तक अंतर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के भाग के रूप में एमपीए, गोवा की महिला कर्मचारियों के लिए अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। प्रमाणित जुम्बा ट्रेनर श्रीमती संगीता दावरे द्वारा दिनांक 27.02.2023 को ''जुम्बा व्यायाम से अपने स्वास्थ्य को बढ़ावा'' विषय पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया ।

दिनांक 28.02.2023 को एमपीए की महिला कर्मचारियों के लिए श्रीमती सूजी मिनेजीस, हेड क्लर्क / एमपीए के मार्गदर्शन में ''चॉकलेट मेकिंग'' पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया ।

दिनांक 01.03.2023 को एमपीए की महिला कर्मचारियों के लिए ब्यूटीशियन और मेकअप आर्टिस्ट श्रीमती कल्पना हरमलकर द्वारा ''स्वास्थ्य और सौंदर्य देखभाल'' पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया।

दिनांक 06.03.2023 को एमपीए अस्पताल की आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. रेशमा बाले द्वारा ''योग और आयुर्वेद के माध्यम से अच्छा स्वास्थ्य'' पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया।

एमपीए की महिला कक्ष द्वारा दिनांक 08.03.2023 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती वनिता सिंह, ऑनर / फ्रेंचाइसी ऑफ ज़ी स्कूल, गोवा मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता थीं। श्रीमती वनिता जोशी, उप संरक्षक / एमपीए की पत्नी भी इस अवसर पर उपस्थित थी। इस दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गये।

स्वास्थ्य और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए एमपीए द्वारा दिनांक 06.03.23 से 13.03.23 तक 52वां राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह– 2023 आयोजित किया गया । इसका समापन समारोह 13.03.23 को किया गया। श्री नितिन वी. रायकर, निदेशक, अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा, गोवा, मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे। सप्ताह के दौरान बच्चों और पत्तन कर्मचारियों के लिए विभिन्न सुरक्षा गतिविधियाँ और प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

क्रूज जहाज एम.वी बोरेलिस का आगमन

दिनांक 15.03.23 को अंतर्राष्ट्रीय यात्री जहाज एम.वी. 'बोरेलिस' लगभग 718 यात्रियों और 630 चालक दल के साथ मुरगांव पत्तन, गोवा में दाखिल हुआ। यात्रियों का स्वागत गोवा के पारंपरिक संगीत, नृत्य और फूलों से किया गया।

सचिव (एमओपीएसडब्ल्यू) का दौरा

दिनांक 18.03.2023 को श्री सुधांश पंत, आईएएस, तत्समयी सचिव (एमओपीएसडब्ल्यू) ने एमपीए, गोवा का दौरा किया। उन्होंने पत्तन परिचालन क्षेत्रों का भी दौरा किया और एमपीए के बोर्ड रूम में एमपीए के तत्समयी अध्यक्ष डॉ. ए.वी. रमणा, उपाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, हितधारक और पत्तन के विभिन्न एसोसिएशन के साथ बैठक की।

राष्ट्रीय समुद्री दिवस समारोह का आयोजन

एनडीएमए कार्यशाला

एमपीए ने एनडीएमए के सहयोजन से दि. 11 से 13 अप्रैल 23 तक एमपीए गेस्ट हाउस में सीबीआरएन में 3 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें सभी स्टेकहोल्डरों में से लगभग 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सीबीआरएन में एक विशेषज्ञ पैनल ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया। कार्यशाला का उद्घाटन एमपीए अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार ने किया।

आंतरिक शिकायत समिति, एमपीए द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

आंतरिक शिकायत समिति, एमपीए ने कर्मचारियों को यौन उत्पीड़न के प्रभाव के बारे में शिक्षित करने और कार्यस्थल को सुरक्षित बनाए रखने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने के उद्देश्य से ''कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम'' विषय पर 12.04.23 को एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

वरिष्ठ अधिवक्ता श्री. सुरेश राव उक्त कार्यक्रम के संकाय थे। कार्यक्रम में एमपीए के कर्मचारियों, सीआईएसएफ कर्मियों और स्कूल के शिक्षकों सहित लगभग 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की जयंती

मुरगांव पत्तन के डॉ. आंबेडकर व्यावसायिक केन्द्र ने दि. 14.04.23 को भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की 132 वीं जयंती मनाई। श्री संकल्प अमोणकर, माननीय विधायक मुरगांव, निर्वाचन क्षेत्र इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। एमएमसी वास्को की काऊंसिलर श्रीमती श्रद्धा अमोणकर सम्मानित अतिथि थीं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों को गणमान्य अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया।

आईएसओ 9001-2015,
आईएसओ 14001-2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

एमपीए और जीएसएल के सतर्कता विभागों ने संयुक्त रूप से दि. 18.04.23 से 19.04.23 तक जीएसएल गेस्टहाउस में' आचरण / अपील नियमों, जांच प्रक्रियाओं और आरक्षण नीति और इसके कार्यान्वयन पर दो दिवसीय जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम' का आयोजन किया। प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन डॉ. एन विनोदकुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष, एमपीए और श्री बी. के. उपाध्याय, सीएमडी, जीएसएल द्वारा किया गया। श्री विजय दत कगीता, सीवीओ / एमपीए और श्री संजय कृष्ण नवहले, सीवीओ / जीएसएल ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

''कम्प्रेशन-ओनली लाइफ सपोर्ट (सीओएलएस)'' पर प्रशिक्षण सत्र का आयोजन

वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. हेमा मयेकर के मार्गदर्शन में दि. 27.04.23 को एमपीए में ''कम्प्रेशन-ओनली लाइफ सपोर्ट (सीओएलएस)'' पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों को चिकित्सा सहायता आने तक किसी व्यक्ति के जीवन को बचाने के लिए सरल कदमों के बारे में अवगत करना था। उक्त सत्र में एमपीए के कर्मचारियों, सीआईएसएफ कर्मियों आदि सहित लगभग 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

क्रूज़ जहाज़ एम.वी. वाइकिंग नेप्चुन का आगमन

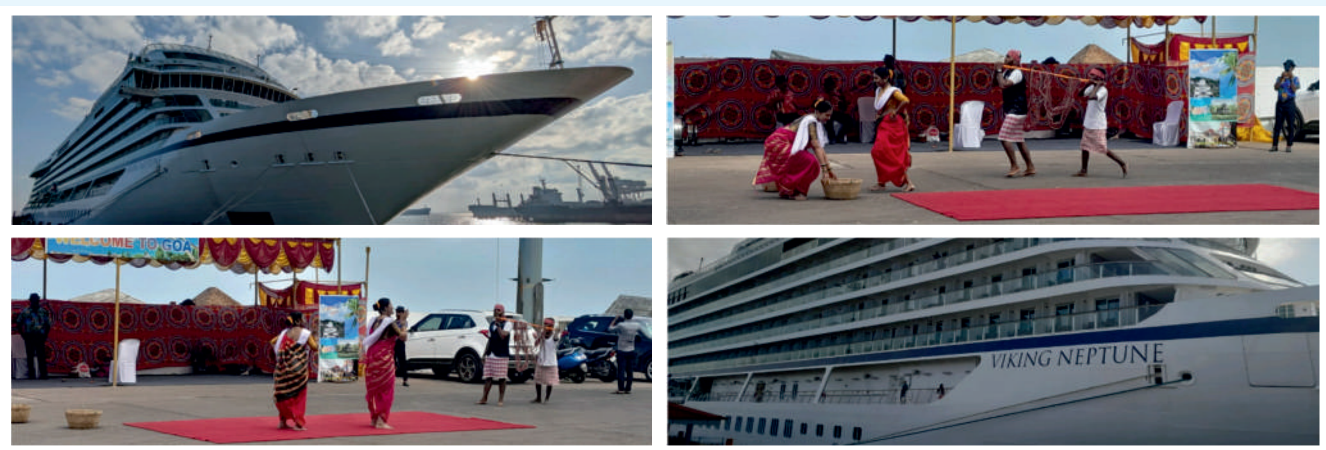

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण का वार्षिक पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने दि. 05.05.23 को एमपीए अतिथि गृह स्थित लॉन में वार्षिक पुरस्कार 2023 कार्यक्रम का आयोजन किया। समारोह के दौरान पत्तन के सभी विभागों के ''वर्ष के सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी'' को पुरस्कार प्रदान कर गया और प्रशंसा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। पत्तन के हितधारकों को भी सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कार और प्रमाणपत्र श्री नवराज गोयल, आईआरएस, सीमा शुल्क आयुक्त, गोवा द्वारा डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष और श्री गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष की उपस्थिति में प्रदान किए गए।

सागर श्रेष्ठ सम्मान पुरस्कार

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण को वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट जहाज घाट दिन उत्पादन के लिए 'सागर श्रेष्ठ सम्मान' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम दि. 10.05.23 को नई दिल्ली में 'हरित सागर' ग्रीन पोर्ट दिशानिर्देशों के लॉन्च के दौरान आयोजित किया गया था। डॉ. एन विनोदकुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष एमपीए ने एमपीए के उपाध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कार्यक्रम में पुरस्कार प्राप्त किया।

मिशन लाइफ पहल कार्य के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने पर्यावरण के लिए हमारी जीवनशैली – मिशन लाइफ इनिशिएटिव के बारे में अधिकारियों को संवेदनशील बनाने हेतु श्री सुदीन प्रभुदेसाई, उप सीई के मार्गदर्शन में पत्तन के सभी विभागों के लिए विभागवार जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया।

सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम एवं प्रदर्शन

अग्निशमन पर प्रथमोपचार के संबंध में सुरक्षा उपायों पर 23.05.23 को एमपीए के कर्मचारियों, प्रशिक्षु छात्रों और सीआईएसएफ कर्मियों के लिए सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम और प्रदर्शन का आयोजन किया गया। श्री ओमप्रकाश सरोज, अग्निशमन अधिकारी/एमपीए द्वारा विभिन्न सुरक्षा उपायों और अग्निशमन तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

दि. 05.06.23 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर, माननीय पीएसडब्ल्यू और पर्यटन राज्य मंत्री श्री श्रीपाद नाईक ने पत्तन के प्रशासन कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया। डॉ. विनोदकुमार, अध्यक्ष, एमपीए, उपाध्यक्ष, सभी विभागाध्यक्ष और पत्तन के हितधारक भी इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री श्रीपाद नाईक ने मुरगांव पत्तन प्राधिकरण, गोवा द्वारा ''हरित सागर'' के तहत कार्यान्वित विविध पहल कार्यों की भी घोषणा की। एमपीए अस्पताल के कर्मचारियों और सीआईएसएफ एमपीए गोवा यूनिट द्वारा भी वृक्षारोपण किया गया।

योग कार्यशाला एवं सत्र का आयोजन

''आज़ादी का अमृत महोत्सव- 2'' के एक भाग के रूप में, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने अपने कर्मचारियों और आश्रितों के लिए दि. 13.06.2023 को योग कार्यशाला और सत्र का आयोजन किया।

दिनांक 14.06.23 को एमपीए अस्पताल द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

''योग सागरमाला'' विषय के तहत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2023 का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2023 की काऊंट डाऊन गतिविधि के रूप में, एमपीए ने योग प्रभा भारती ट्रस्ट, गोवा क्षेत्र के सहयोग से दि. 19.06.23 को ''समर्पण ध्यान सत्र'' का आयोजन किया। एमपीए के अध्यक्ष डॉ. एन विनोदकुमार ने कार्यक्रम का निरीक्षण किया। इसमें पत्तन, सीआईएसएफ और आरएओ पदाधिकारियों ने भाग लिया।

आईएसओ 9001-2015,
आईएसओ 14001-2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

एमपीए ने ईशा फाउंडेशन के सहयोग से दि. 20.06.23 को ''कल्याण के लिए ईशा योग'' इस विषय परयोग सत्र का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य लोगों को योग को अपने जीवन में लाने और अपनी भलाई के लिए अधिक समय लगाने के लिए एक कदम आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम का संचालन पत्तन कर्मचारी सुश्री गेरुशा करंडे, ईशा ध्यानकर्ता और स्वयंसेविक द्वारा किया गया और इसमें पत्तन के अधिकारियों व सीआईएसएफ कर्मियों ने भाग लिया।

''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' के अवसर पर दि. 21.06.23 को सुबह 7.30 बजे से 8.30 बजे तक एमपीए के बर्थ पर अनुसंधान पोत ''सागर कन्या'' के सभी चालक दल के सदस्यों के लिए एक योग कार्यक्रम आयोजित किया गया था। योग विशेषज्ञ और पत्तन अधिकारी, श्री. बी. जी. देसाई, ने विभिन्न योग अभ्यासों का प्रदर्शन कर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

एमपीए प्रशासनिक कार्यालय भवन परिसर में दि. 21 जून 2023 को योग सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सभी विभागाध्यक्ष, पत्तन पदाधिकारियों व सीआईएसएफ कर्मियों ने भाग लिया। योग गुरु श्रीमती फरहत जहान ने विभिन्न आसनों का प्रदर्शन कर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

मुरगांव पत्तन द्वारा संचालित दीपविहार स्कूल में भी दि. 21.06.23 को एक योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त सत्र में सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर, सीआईएसएफ यूनिट एमपीए गोवा में योग सत्र का आयोजन किया गया है ।

जी 20 प्रेसीडेंसी में डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष एमपीए द्वारा अंतर्राष्ट्रीय और देशी क्रूज़ टर्मिनल के आगामी अवसंरचना के विकास पर प्रस्तुति।

एमओपी (उर्वरक) की आपूर्ति

स्वच्छ और हरित वस्तुओं की ओर अपने कार्गो मिश्रण में विविधता लाने की दृष्टि से एमपीए के निरंतर प्रयासों में, पत्तन ने दि. 27.06.23 को पत्तन परिसर से सीधे बाजारों में एमओपी (उर्वरक) भेजने की मूल्य वर्धित सेवा की सुविधा शुरू की । डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष, एमपीए और पारादीप फॉस्फेट्स लिमिटेड (पीपीएल) गोवा यूनिट के सीएमओ–यूएच, श्री नीलेश देसाई द्वारा उपाध्यक्ष व सभी विभागाध्यक्षों तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में, हरी झंडी दिखाकर पहले ट्रक को भेजा गया ।

परिवहन, पर्यटन और संस्कृति की संसदीय समिति की बैठक

पत्तनों के आधुनिकीकरण के विषय पर दि. 08.07.23 को मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के साथ परिवहन, पर्यटन और संस्कृति की संसदीय समिति की बैठक आयोजित की गई थी। डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और श्री अश्वथ, डीए, एमपीएसडब्ल्यू और अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

सी डिविजन क्रिकेट में विजेता ट्रॉफी

एमपीए स्पोर्ट्स काउंसिल के अध्यक्ष कप्तान मनोज जोशी, उप संरक्षक, को गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत द्वारा राष्ट्रीय सी – डिविजन क्रिकेट विजेता ट्रॉफी प्रदान की गई।

एमओपीएसडब्ल्यू के माननीय मंत्री श्री सर्बानंद सोणोवाल का दौरा

श्री सर्बानंद सोणोवाल, माननीय केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग और आयुष मंत्री और श्री श्रीपाद नाईक, माननीय राज्य मंत्री, पीएसडब्ल्यू और पर्यटन ने दिनांक 13.7.23 को एमपीए का दौरा किया और अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार, उपाध्यक्ष, पत्तन पदाधिकारी और हितधारकों के साथ चर्चा की । तदनंतर एमपीए गेस्ट हाउस में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान एमपीए ने गोवा की लोकप्रिय टीवी और फिल्म कलाकार, रेडियो और टीवी एंकर, सामाजिक कार्यकर्ता, विभिन्न राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता श्रीमती अमिता नायक सलत्री को माननीय मंत्री श्री सर्बानंद जी के हाथों और श्री श्रीपाद नाईक की उपस्थिति में सम्मानित किया।

बिट्स पिलानी इंटर्नशिप छात्रों द्वारा प्रस्तुति सत्र

हरित सागर पहल कार्यों के संबंध में चर्चा सत्र

हरित सागर की दिशा में एक पहल के रूप में, एमपीए ने 19 जुलाई 2023 को हरित ईंधन के अवसरों और इसके पारिस्थितिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं पर चर्चा सत्र का आयोजन किया।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में भारत के 77 वें स्वतंत्रता दिवस समारोह, 2023 का आयोजन